नवम्बर-2015 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 6 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

नवम्बर-२०१५

नारी सबला बने,
पताका फहराए साहस की।
मिले उसे सम्मान जगत् में,
यही कामना सबकी।
सत्यार्थप्रकाश के अन्दर मित्रो !
यही भावना ऋषि की।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ४७

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम ! एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे- सब्जी, घी-तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च-मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

M D H

मसाले

असली मसाले सच-सच

ESTD. 1919

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
कार्तिक कृष्ण एकादशी
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

November- 2015

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४	वेद सुधा
१०	सत्यार्थप्रकाश पहेली-२२
११	नवजागरण के पुरोधा
१४	बाल-निर्माण
१६	ऋषि दयानन्द और हिन्दी साहित्य
२१	अब खत्म करें जातीय आरक्षण
२२	दीप एक जलता रहे
२३	आर्य भारत के मूल निवासी हैं
२८	कथा सरित
२९	स्वास्थ्य- थाइरॉइड के संकेत
३०	सत्यार्थ-पीयूष- आश्रम व्यवस्था

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ६

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

पति और पत्नी का प्रेम

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
कीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२ गतांक से आगे ....

सुखी गृहस्थ का तीसरा साधन है पति और पत्नी का प्रेम। इसी की ओर लक्ष्य करते हुए मन्त्र में कहा है-

इहैव स्तम्, मा वि यौष्टम।

इन दोनों पदों का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। परमात्मा ने पति और पत्नी को आदेश दिया है कि 'यहीं रहो' अर्थात् गृहस्थाश्रम में रहो अथवा घर में एक साथ रहो। गृहस्थाश्रम अथवा घर में एक साथ रहने के पश्चात् यह कहा गया है कि आपस में द्वेष न करो। ये दोनों बातें परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। पति-पत्नी जब तक एक साथ न रहें तब तक गृहस्थ अपूर्ण है। गृहस्थ की पूर्णता इसी में है कि पति और पत्नी एक साथ रहें। वास्तव में पुरुष का जीवन स्त्री के बिना और स्त्री का जीवन पुरुष के बिना अधूरा है। तैत्तरीयब्राह्मण में कहा गया है-

पुरुषो वै यज्ञः। अयज्ञो वै एष यो अपत्नीकः
अर्धो वै एष आत्मनो यत् पत्नी। - तै. ब्रा. ३।८।२३

पुरुष निश्चय ही यज्ञ कर्म के लिए है। वह निश्चय ही यज्ञ कर्म के लिए अयोग्य है जो पत्नी से रहित है क्योंकि पुरुष के शरीर का आधा भाग है पत्नी।

अर्धो ह वै एष आत्मनो यत् जाया
तस्माद् यावत् जायां न विन्दते नैव तावत् प्रजायते।
असर्वो हि तावद् भवति। - शत. ५।२।६।१०

जो स्त्री वह निश्चित रूप से पुरुष का आधा भाग है। इसलिए मनुष्य जब तक स्त्री को नहीं पाता, तब तक पुत्रवाला नहीं होता है, निःसंदेह तब तक अपूर्ण ही रहता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों के उपर्युक्त उद्धरणों से यह सिद्ध हुआ है कि पुरुष स्त्री के बिना अपूर्ण है। यह वैवाहिक सम्बन्ध ही उनमें पूर्णता लाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों ने क्या सुन्दर बात कही है।

'इहैव स्तम् मा वियौष्टम्' इस द्विवचन से एक और बात निकलती है कि एक पुरुष का केवल एक स्त्री के साथ और एक स्त्री का केवल एक पुरुष के साथ गृहस्थ सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए। एक स्त्री के कई पति हों और एक पुरुष की कई पत्नियाँ, वेद ने द्विवचन का प्रयोग कर इन दूषित प्रथाओं का विरोध कर दिया है। इन दूषित प्रथाओं के कारण गृहस्थाश्रम सुखी नहीं बन सकता। यह वैदिक नियम है कि एक पुरुष के साथ एक स्त्री का ही वैवाहिक सम्बन्ध हो सकता है। जिसने इस नियम को तोड़ा उसने दुःख ही प्राप्त किया, वह जीवन में सुख को प्राप्त नहीं कर सका। महाराजा दशरथ ने इस नियम की अवहेलना की। उनके घर में कितना बड़ा कलह खड़ा हो गया। घर की जो स्थिति बनी उससे सारा जगत् परिचित है। इस्लाम के प्रवर्त्तक हजरत मुहम्मद को बहु-विवाह के कारण गृहकलह का शिकार होना पड़ा। जहाँ-जहाँ भी इस नियम को तोड़ा गया वहाँ-वहाँ ही घर की शान्ति एवं सुख नष्ट हो गये।

'इहैव स्तम्' का एक अभिप्राय यह भी है कि यह वैवाहिक सम्बन्ध जीवनपर्यन्त है, अस्थायी नहीं है। पाश्चात्य देशों में पत्नी और पति के होते हुए भी पुरुष अन्य स्त्रियों के साथ और स्त्री अन्य पुरुष के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। वैदिक मान्यता के अनुसार यह निषिद्ध है। पाश्चात्य जगत् के विचारक भी अब इन रीतियों से क्षुब्ध हैं। इन रीतियों ने वहाँ विवाह की पवित्रता को नष्ट कर दिया है, पुरुष और स्त्री सम्बन्धों में स्थिरता नहीं रहने दी है। इस प्रकार का जीवन उनके लिए अभिशाप बन चुका है। भारतवासियों को इन अनादर्शों का अनुसरण करके अपने जीवन को दूषित नहीं करना चाहिए। मनु महाराज ने इस उच्छशृंखलता को रोकने के लिए यह प्रतिबंध रख दिया-

स्वदारनिरतः सदा। - मनु. ३।४५

मनुष्य को सदा अपनी पत्नी में ही प्रसन्न रहना चाहिए'- यह कहकर मनु ने कामवासना को मर्यादा के तटबन्धों में बांध दिया।

यही आदर्श है कि जिसने वैदिक गृहस्थ को आदर्शमय बनाया है। वास्तव में विवाह दो शरीरों का मिलन नहीं, अपितु दो हृदयों का मिलन होता है। जब तक दो दिल आपस में नहीं मिलेंगे तब तक विवाह सफल नहीं समझा जा सकता। विवाह के समय अनेक मंत्रों द्वारा इस मानसिक मिलन की बात को पुनः-पुनः दोहराया गया है-

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ।। - ऋ १०।८५।४७

वर और कन्या प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि यज्ञशाला में बैठे हुए विद्वान् लोगों! हम प्रसन्नतापूर्वक गृहस्थाश्रम में एकत्र रहने के लिए एक दूसरे को स्वीकार करते हैं। हम दोनों के हृदय जल के समान शान्त और मिले रहेंगे, जैसे प्राणवायु सबको प्रिय है वैसे हम दोनों एक दूसरे से सदा प्रसन्न रहेंगे, जैसे धारण करने हारा परमात्मा सबमें मिला हुआ सब जगत् को धारण करता है वैसे ही हम एक दूसरे को धारण करेंगे, जैसे उपदेश करने वाला श्रोताओं से प्रीति करता है वैसे हम दोनों का आत्मा एक दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को धारण करेंगे।

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः।। - ऋ १०।८५।३६

हे वरानने! मैं ऐश्वर्य और सुसन्तानादि सौभाग्य की वृद्धि के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। तू मुझ पति के साथ जरावस्था को सुखपूर्वक प्राप्त हो तथा हे वीरे! मैं सौभाग्य की वृद्धि के लिए आपके हस्त को ग्रहण करती हूँ। आप मुझ पत्नी के साथ वृद्धावस्थापर्यन्त प्रसन्न एवं अनुकूल रहिए। आपको मैं और मुझको आप आज से पति-पत्नी भाव करके प्राप्त हुए हैं। सकल ऐश्वर्ययुक्त, न्यायकारी, सब जगत् की उत्पत्ति का कर्त्ता, बहुत प्रकार से जगत् का धर्ता परमात्मा और ये सब सभामण्डप में बैठे हुए विद्वान् लोग गृहस्थाश्रम कर्म के अनुष्ठान के लिए तुझको मुझे देते हैं।

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।
वीरसुर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। - ऋ.१०।८५।४४

जगत्प्राण, दुःखनाशक, सुखस्वरूप परमात्मा की कृपा से हे वरानने! तू पति से विरोध न करने वाली और प्रियदृष्टि हो। मंगलकारी, सब पशुओं को सुखदाता, पवित्रान्तःकरणयुक्त, सुन्दर शुभ गुण-कर्म-स्वभाव और विद्या से सुप्रकाशित, उत्तम वीर पुत्रों को उत्पन्न करनेहारी, परमात्मा की उपासना करनेहारी, हमारे मनुष्यों और गाय आदि पशुओं के लिए सुख देने वाली हो। ऋग्वेद के इन तीन मंत्रों के पश्चात् अथर्ववेद के कुछ मंत्र हैं जो पति-पत्नी को पारस्परिक प्रेम की प्रेरणा देते हैं:-

भगस्ते हस्तमग्रहीत्सविता हस्तमग्रहीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव।। - अथर्व. १४।१।५१

वर वधू से कहता है कि ऐश्वर्ययुक्त मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ और धर्मयुक्त मार्ग में प्रेरक मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। तू धर्म से मेरी पत्नी है और मैं तेरा गृहपति हूँ।

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्।। - अथर्व. १४।१।५२

सब जगत् का पालन करने वाले परमात्मा ने जिस तुझको मुझे दिया है, तू जगत् भर में मेरी पोषण करने योग्य हो। तू मुझ पति के साथ सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक जीवन धारण कर।

त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम्।
तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्तां प्रजया।। - अथर्व. १४।१।५३

हे शुभानने! परमात्मा की और विद्वानों की शिक्षा से हम दम्पती होते हैं। तू मेरी प्रसन्नता के लिए सुन्दर वस्त्र और आभूषण तथा सुख को प्राप्त हो। हम दोनों की इच्छा को परमात्मा सिद्ध करें। सकल जगत् की उत्पत्ति करने वाला और पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा जैसे इस नारी को सन्तान से शोभायुक्त करे, इसी प्रकार सूर्य की किरण के समान तुझको मैं भी सुशोभित करूँ।

अहं वि ष्यामि मयि रूपमस्या वेददित्पश्यन्मनसः कुलायम्।
न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानो वरुणस्य पाशान्।। - अथर्व १४।१।५७

जैसे मन से कुल की वृद्धि को देखता हुआ मैं इस तेरे रूप को प्रीति से प्राप्त और इसमें प्रेम द्वारा व्याप्त होता हूँ, वैसे तू मेरी वधू मुझमें प्रेम से व्याप्त होकर अनुकूल व्यवहार को प्राप्त होवे। जैसे मैं मन से भी तुझ वधू के साथ चोरी को छोड़ देता हूँ और किसी

उत्तम पदार्थ का चोरी से भोग नहीं करता हूँ, आप पुरुषार्थ से शिथिल होकर भी उत्कृष्ट व्यवहार से विघ्नरूप दुर्व्यसनी पुरुष के बन्धनों को दूर करता रहूँ, वैसे ही यह वधू भी किया करे।
वेदमंत्रों की ये भावनाएँ गृह्यसूत्रों के अन्दर भी आई हैं-

यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा।
हिरण्यपर्णोवैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु।। - पार. का. १/८

जैसे पवित्र वायु और तेजोमय जल आदि को किरणों से ग्रहण करने वाला सूर्य दूरस्थ पदार्थों और दिशाओं को प्राप्त होता है वैसे ही तुझको परमेश्वर मेरे मन के अनुकूल करे। हे वीर! जो आप मन से मुझको प्राप्त होते हैं उस आपको जगदीश्वर मेरे मन के अनुकूल सदा रखे।

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चितमनुचित्तं ते अस्तु।
मम वाचमेकना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।। - पार. का. १ नं. ८।८

हे वधू! तेरे अन्तःकरण और आत्मा को मैं अपने व्रत के अनुकूल धारण करता हूँ। मेरे चित्त के अनुकूल तेरा चित्त सदा रहे। मेरी वाणी को तू एकाग्रचित्त से सेवन कर। प्रजा का पालन करने वाला परमात्मा तुझको मेरे लिए नियुक्त करे।
मैत्रीय गृह्यसूत्रों और गोभिलीय गृह्यसूत्रों में तो पति और पत्नी के मानसिक ऐक्य को और भी स्पष्टता के साथ व्यक्त किया गया है। इसमें जो कुछ कहा गया है, उससे परे और कुछ कहने की गुंजाइश ही नहीं रहती।

अन्नपाशेन मणिना प्राणसूत्रेण पृश्निना।
बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते।। - मैत्रे. ब्रा. १।३।८

हे वर वधू! जैसे अन्न के साथ प्राण, प्राण के साथ अन्न तथा अन्न के प्राण का अन्तरिक्ष के साथ सम्बन्ध है वैसे तेरे हृदय, मन और चित्त को सत्य की गाँठ से बाँधती वा बाँधता हूँ।

यदेतद्धृदयं तव तदस्तु हृदयं मम।
यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव।। - मैत्रे. ब्रा. १।३।६

हे वर वा हे वधू! जो यह तेरा आत्मा वा अन्तःकरण है वह मेरे आत्मा व मेरे अन्तःकरण के तुल्य प्रिय हो और मेरा जो यह आत्मा, प्राण और मन है सो तेरे आत्मादि के तुल्य सदा प्रिय रहे।
मनु महाराज ने स्त्री जाति के गौरव और उसके मान को उन्नत करने के लिए बहुत कुछ कहा है। इसी प्रकरण में उन्होंने पति पत्नी की पारस्परिक प्रसन्नता पर एक मार्मिक श्लोक कहा है-

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।। - मनु. ३।६०

जिस कुल में पति पत्नी से और पत्नी पति से सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में अटल कल्याण होता है।
वेद के ये मंत्र, गृह्यसूत्रों और मनुस्मति के ये प्रमाण सभी इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि गृहस्थ सुख के लिए पति पत्नी का प्रेम बहुत आवश्यक है।
वेद भगवान् ने **'इहैव स्तम'** के पश्चात् कहा **'मा वि यौष्टम'** अर्थात् तुम दोनों वियोग मत करो। वियोग तभी नहीं होता जबकि पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम सम्बन्ध हो, उनका मन आपस में मिला हुआ हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी संदर्भ में सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में कहा है, यही निश्चय जानना जब विवाह होवे तब स्त्री के साथ पुरुष और पुरुष के साथ स्त्री बिक चुकी। अर्थात् जो स्त्री और पुरुष के साथ हाव, भाव, नखशिखाग्रपर्यन्त जो कुछ हैं, वह वीर्यादि एक दूसरे के आधीन हो जाता है। स्त्री वा पुरुष प्रसन्नता के बिना कोई भी व्यवहार न करें। इनमें बड़े अप्रियकारक व्यभिचार, वेश्या पर-पुरुषगमनादि काम हैं। इनको छोड़के अपने पति के साथ स्त्री और स्त्री के साथ पति सदा प्रसन्न रहैं।
पति और पत्नी गृहस्थरूपी गाड़ी के दो पहिए होते हैं। जब दोनों पहिए सुचारु रूप से चलते हैं तभी गृहस्थरूपी गाड़ी ठीक ढंग से चल पाती है। दो शरीरों के मिलने का नाम गृहस्थ नहीं, अपितु दो दिलों के मिलने का नाम गृहस्थ है। गृहस्थ की सफलता इसमें है कि पति और पत्नी का मन एक हो, उनमें परस्पर प्रीति बनी रहे। जब तक पति और पत्नी का परस्पर प्रेम नहीं होता तब तक गृहस्थ का आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। वही गृहस्थ स्वर्ग तुल्य है, जहाँ पति और पत्नी का प्रेम है।

अमीरी मालो दौलत में समझना कम निगाही है।
जहाँ दो दिल रहें मिलकर वहीं पर बादशाही है।। **क्रमशः ....**

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

आत्मनिवेदन

स्मार्ट ही नहीं संस्कार सिटी भी चाहिए

आजकल जोरशोर से स्मार्ट सिटी बनाने की बात चल रही है। ये सर्व सुविधायुक्त, स्वच्छ, आधुनिकतम व सुविधाजनक यातायात, विद्युत व्यवस्था, संचार व्यवस्था वाले नयनाभिराम शहर होंगे। १०० एमबीपीएस रफ्तार का इण्टरनेट होगा। यह अत्यन्त स्वागत योग्य कदम है। हमारा प्यारा उदयपुर शहर भी इसमें सम्मिलित है अतः उदयपुरवासियों को बधाई।

इसमें कोई भी संदेह नहीं कि भौतिक सुख सुविधा सुखदायक/आरामदायक होती है। मन को प्रफुल्लित करती है। परन्तु इस आलेख में ध्यानाकर्षण के लिए हम यह उल्लिखित करना चाहते हैं कि संस्कार सिटी के अभाव में स्मार्ट सिटी पूर्ण सुखप्रदायक नहीं हो सकता। पर शोक इस बात का है कि इस तरफ नीति निर्माताओं का अथवा समाजशास्त्रियों का कोई ध्यान ही नहीं है। देश का भविष्य युवा पीढ़ी के हाथ में है। अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर मोटी रकम वाली नौकरी प्राप्त करना आज इसका प्राथमिक उद्देश्य हो गया है, जो गलत है ऐसा कतई नहीं कहा जा सकता। देश ज्ञान-विज्ञान में खूब तरक्की करे, विज्ञान से तकनीकी विकास हो जिससे मनुष्य का जीवन सुखदायक हो ऐसा मानना, सोचना, करना स्वागत योग्य है परन्तु आज इस दिशा में तेजी से बढ़ते कदमों के बावजूद भी वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में जो त्रासदी दिखायी दे रही है उसका क्या कारण है यह सोचना पड़ेगा। कारण अनेक हो सकते हैं परन्तु हमारी दृष्टि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है चरित्र निर्माण पर ध्यान न देना। आज ऐसा माहौल बन गया है कि चरित्र निर्माण और नैतिकता की बात करते ही उस व्यक्ति को ऐसी नजरों से देखा जाता है जैसे वह अजायबघर का प्राणी हो। आज बुद्धिजीवी वह है जो संस्कृति तथा सभ्यता के स्थापित मापदण्डों को सिरे से खारिज कर देता हो। 'परिवार' नामक प्राथमिक चरित्र निर्माण तथा 'आचार्यकुल' नामक द्वितीयक चरित्र निर्माण शालाओं के इस पक्ष को तो सर्वथा अनावश्यक समझा जा रहा है। परन्तु बढ़ती हुई कुण्ठाएँ, आत्महत्याएँ, यौन अपराध इसी असावधानी के परिणाम हैं। समाज में धीरे-धीरे कुछ धारणाएँ इस प्रकार सुस्थापित हो जाती हैं कि उनके विरुद्ध ध्यानाकर्षण करने वाले की आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज जैसी सुनायी देती है। हम गाँधी जी का उदाहरण लेते हैं। उनकी उपलब्धियों से इन्कार तो नहीं किया जा सकता परन्तु उनकी विफलताओं व कमजोरियों पर लिखने वाली कलम को हेय माना जाता है। आज अनेक ऐसे राजनेता हैं जो आरक्षण की विषवेल के दुष्परिणाम को भली भाँति जानते हैं पर किसी माई के लाल की यह कहने की हिम्मत भी नहीं होती कि आरक्षण की बैशाखी के सहारे अब जो बड़े ऑफिसर बन चुके हैं, राजनेता बन चुके हैं उनके परिवार को आरक्षण क्यों?

आज ब्रह्मचर्य की बात करने, सहशिक्षा के दोषों का दिग्दर्शन कराने, यौन अपराधों के बढ़ते ग्राफ के मूल में अश्लील सामग्री व इण्टरनेट पर ऐसी ही बेवसाइटों तक निर्बाध पहुँच को देखने वाले लोग, देश के बुद्धिजीवियों की दृष्टि में परले सिरे के अहमक हैं। वर्तमान सरकार द्वारा ऐसी बेवसाइटों पर प्रतिबंध लगाने के उद्यम का क्या हश्र हुआ आपके समक्ष है।

परन्तु सत्य यह है कि चाहे आज के बुद्धिजीवी हों या समाजशास्त्री, जब तक इस पहलू का समाधान नहीं निकालेंगे स्मार्ट सिटी 'क्राइम' मुक्त नहीं होंगे।

मोटे तौर पर नवजात शिशु पर तीन स्रोतों से संस्कार पड़ते हैं। प्रथम, पूर्व जन्म के संस्कार जो वह साथ लेकर आता है। द्वितीय, जो माता-पिता से आनुवांशिकता के क्रम में प्राप्त होते हैं। तृतीय, जन्म के पश्चात् पहले परिवार, दूसरे विद्यालय व तीसरे समाज के परिवेश के अनुरूप जो विकसित होते हैं।

इनमें से पूर्वजन्म के संस्कारों को भी किसी हद तक नियंत्रित तो किया जा सकता है परन्तु दूसरे तथा तीसरे स्रोत से सुचरित्र का निर्माण हो ऐसा सुनिश्चित किया जा सकता है। ईश्वर विश्वास तथा आध्यात्मिकता का विकास वस्तुतः इन्हीं शालाओं में होता है जो आपमें आत्मबल का संचार करता है। पर आज की शिक्षा पद्धति में इसका अभाव है। यही कारण है कि तनिक भी संकट आने का आज पर युवा धैर्य धारण नहीं वरन् आत्महत्या के द्वारा परिस्थिति से निजात पाना अधिक श्रेष्ठ समझने लगा है।

अभी हाल में ३० अगस्त २०१५ को देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के प्रथम वर्ष की छात्रा बीकानेर की खुशबू चौधरी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। तमिलनाडु में अध्यापक के डाँटने पर मात्र १७ साल के छात्र ने आत्महत्या कर ली। सितम्बर १४ से जून १५ के मध्य आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ रहे छः छात्रों ने अपनी जान दे दी। शायद पढ़ाई के दबाव को सहन नहीं कर पाए। ऐसा क्यों? स्वस्थ सामाजिक रचना हेतु परिवारों तथा शिक्षणालयों को पुनः मानव निर्माण शाला के रूप में स्थापित करने हेतु सद्विचारों के आरोपण तथा कुविचारों के लोपन से परिवेष्ठित करना होगा।

परिवार को मानव निर्माण शाला कहें तो अनुचित नहीं होगा। परिवार ही प्रथम स्थल है जहाँ स्वार्थ की बलि तथा परार्थ उत्सर्ग की भावना से परिचय होता है। सबसे बड़ी बात कि अपने अतिरिक्त अन्य के नजरिए को समझना तथा सम्मान देना इसी वर्कशॉप में सीखा जाता है। इस प्रकार मानवीय संवेदना का प्रादुर्भाव परिवार में ही होता है।

आज के आपाधापी के युग में सर्वत्र तनाव की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में परिवार ही वह सुकून देने वाला स्थल है जहाँ ममत्व, स्नेह, आत्मीयता की छाँव में परिवार के सदस्य अपार शान्ति की तलाश कर सकते हैं। वे अपनी समस्या को परिवार के अन्य सदस्यों के साथ विशेष रूप से माता-पिता-पत्नी के साथ बाँट सकते हैं। सहज समाधान प्राप्त कर, जो समस्या दिनों से उन्हें परेशान कर रही थी उससे छुटकारा प्राप्त कर तनाव मुक्त हो सकते हैं। परन्तु आज ऐसा प्रतीत होता है कि अविश्वास, सन्देह और आशंकाओं के जो बादल समाज में विस्तीर्ण हो रहे हैं वे परिवारों में भी प्रवेश कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण पारस्परिक सद्भाव, असीमित त्याग, सामन्जस्य तथा सीमातीत क्षमाभाव की जो परिधि/मेखला परिवार को सुरक्षित रखे हुए थी उसमें अब जगह जगह छेद हो गए हैं और परिवार तनाव मुक्ति के नहीं, तनाव के जनक हो गए हैं जिसकी खौफनाक परिणिति भी दिखाई दे रही है।

ऐसी दशा में परिवार के परिवार बर्बाद हो रहे हैं। परिवारों के नैतिक वातावरण में अनैतिकता का निर्बाध प्रवेश, जिसका स्रोत चारों ओर का वह परिवेश है जिसका निर्माण पाश्चात्य रंग में रंगे समाजशास्त्रियों द्वारा किया जा रहा है।

उन्मुक्त परिवेश पर कोई वर्जना नहीं, यह आज के युवा की मनःस्थिति बनती जा रही है। विचार मनुष्य जीवन को दिशा प्रदान करते हैं और विचार बनते हैं उस सबसे जो कुछ हम देखते हैं तथा सुनते हैं। आज जो कुछ देखा व सुना जाता है उसका ज्यादा हिस्सा अभद्र होता है। परिणामतः परिवार तथा समाज का परिवेश भी Frustration तथा Confusion से भरा पड़ा है।

एक खाते पीते भरे पूरे परिवार का मुखिया अनन्य चक्रवर्ती प्रतिष्ठित जाँच एजेन्सी में अधिकारी था। पत्नी अध्यापिका। एक पुत्र व एक पुत्री। कारणों का तो पता नहीं, पर निश्चित ही वह अत्यन्त तनाव में था जो दिल दहला देने वाली घटना घटी। अनन्य ने बड़ी निर्ममता के साथ पत्नी और दोनों बच्चों की हत्या कर दी। फिर स्वयं को फाँसी लगा आत्महत्या कर ली। यहाँ उल्लेखनीय है कि भुज भूकम्प की शिकार बच्ची को अनन्य चक्रवर्ती ने गोद लिया था। यह तनाव अनन्य के ऑफिस की देन हो सकता है परिवार के सदस्यों की वजह से पनपा हो सकता है अथवा आधुनिक जीवनशैली का परिणाम हो सकता है। जो भी हो नतीजा भयंकर, पूरे परिवार का विनाश।

२०-२५ वर्ष पूर्व एक संभ्रान्त परिवार की घटना का स्मरण हो आया। घर का मुखिया सेना में बड़ा ऑफिसर था। पत्नी, दो बेटियाँ एक छोटा पुत्र। आधुनिक जीवनशैली। पारिवारिक सामन्जस्य की डोर मजबूत नहीं रह सकी। नतीजा भयंकर काण्ड। मेजर ने सभी सदस्यों को कार में लॉक करके खाई में धकेल दिया। एक लड़की किसी तरह निकल भागी। निर्ममता की सीमा देखिए जन्मदाता ने स्वयं बड़ा पत्थर ले उसका सिर कुचल दिया। इतने में दूसरी बेटी निकल भागने में सफल हो गई और घटना प्रकाश में आयी तथा पिता को सजा मिली। कारण क्या था? पिता स्वयं तो उन्मुक्त वर्जनाविहीन जीवनशैली में लिप्त था परन्तु जब पत्नी व बेटियों ने वही राह पकड़ी तो सह नहीं सका।

वर्तमान परिवेश में पारम्परिक मान्यताएँ समाप्त हो रही हैं। आधुनिक जीवनशैली उन्मुक्त तथा उच्छश्रृंखल है। अपनी इच्छापूर्ति प्रमुख हो रही है, परिवार के दूसरे सदस्यों का नजरिया समझना अनावश्यक माना जा रहा है। परिवार में दो पीढ़ियों के बीच का अन्तराल खाई बन चुका है।

अत्यधिक चर्चित 'आरुषि मर्डर केस' में ऐसा ही कुछ देखने में आया। समृद्ध डाक्टर दम्पत्ति की इकलौती सन्तान। किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं। पर स्वच्छन्द मानसिकता के चलते आरुषि सैलाब में बह गई। घर के नौकर हेमराज से अमर्यादित निकटता। परिणाम कलेजे के टुकड़े का स्वयं माँ-बाप द्वारा निर्मम कत्ल।

आज इन पंक्तियों को लिखते समय एक अखबार का पृष्ठ सामने है। एक ही पृष्ठ पर छः घटनाऐं चिन्तन को झकझोरने वाली हैं।

१. श्री गंगानगर के एक शिक्षा मंदिर(?) में अध्यापक (गुरु?) जिसके अवकाश प्राप्ति में मात्र छह मास का समय शेष है, ने दो छात्रों को पृथक् क्वार्टर में ले जाकर अश्लील हरकतें कीं। शिक्षक को गिरफ्तार किया जा चुका है।

२. एक अन्तर्राष्ट्रीय नृत्यांगना के फार्म हाउस पर रेव पार्टी का आयोजन। विदेशी युवती सहित युवक शराब, स्मैक, गाँजे के नशे में धुत्त। डीजे की तेज आवाज के मध्य क्या हो रहा था यह आप अन्दाज लगा सकते हैं। २७ युवक गिरफ्तार किए गए।

३. अभी कुछ समय पूर्व उदयपुर के नवनिर्मित होटल में से पुरुषों व महिलाओं को आपत्तिजनक स्थिति में पुलिस ने गिरफ्तार किया था। होटल के मालिक की बात क्या कहें मालकिन स्वयं मौके पर पैसे इकट्ठे करती हुई गिरफ्तार हुई। भारतीय नारी कहाँ से कहाँ पहुँच गई पर समाजशास्त्री मस्त हैं।

४. सलोवा निवासी ५० वर्षीय दलसिंह चौथी शादी करना चाहता था। एक बच्चे की माँ उसकी पड़ोसन से। बच्चे को इच्छापूर्ति में व्यवधान मान दलसिंह ने क्रूरतापूर्वक गर्दन मरोड़कर उसे ठिकाने लगा दिया।

५. हनुमानगढ़। छोटी बहनों को शक था कि बड़ी बहन किसी से फोन पर बात करती है। झगड़ा हुआ। दोनों छोटी बहिनों ने बड़ी बहिन को उसी की चुनरी से गला घोंटकर मार दिया।

६. माँ और पाँच बेटियों की मौत। कारण पति-पत्नी का झगड़ा। पत्नी ने पहले पाँचों बेटियों को मारा फिर स्वयं कीटनाशक पीकर आत्महत्या कर ली।

ये एक दिन के एक पृष्ठ के समाचार हैं। और यह ऐसा इकलौता दिन नहीं है। प्रायः समाचार पत्र ऐसे समाचारों से अटे पड़े रहते हैं। परिवार स्वयं ही संस्कारों के अभाव में निर्माण की अपनी सामर्थ्य खो चुके हैं। अन्त में आज के बहुचर्चित काण्ड शीना मर्डर केस की भी चर्चा कर दें। आप देखेंगे कि परिवार की तो बात क्या विवाह नामक संस्था ही आज के संभ्रान्तों की नजर में अप्रासंगिक हो गई है। 'लिव इन' का दौर तेजी से पैर पसार रहा है। ऐय्याशी ही ऐय्याशी। जिम्मेदारी जीरो। शीना तथा मिखाइल ऐसी ही लिवइन की सन्तान। माँ इन्द्राणी ने कितनी शादी कीं या सम्बन्ध रखे- नित नए रहस्योद्घाटन। आधुनिकता के दौर की स्वार्थपरता, भौतिक चमक दमक, विलासिता की साक्षात् घटना जिसमें माँ अपनी बेटी का Cold blooded Murder कर देती है, मिसाल है, चेतावनी है कि हमारा समाज किस दिशा में जा रहा है। माँ इन्द्राणी को अपनी कारगुजारी तो मंजूर थी पर भाई-बहिन के लिवइन सम्बन्ध स्वीकार नहीं थे। इस पतनोन्मुख समाज के पीछे अन्तर्निहित कारण सबको ज्ञात हैं परन्तु प्रगतिशीलता के झण्डाबरदार इसे स्वीकार करना नहीं चाहते। वे अभी भी उन्मुक्तता के पक्षधर और वर्जनाओं के विरोधी हैं और शायद तब तक रहेंगे जब तक उनका अपना कोई ऐसी स्थिति से नहीं गुजरेगा।

महाभारत के एक आख्यान में प्रश्न किया गया कि संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है। महाराज युधिष्ठिर ने उत्तर दिया- 'हर कोई जानता है मृत्यु प्रत्येक को ग्रास बनाती है पर मानता नहीं कि उसकी मृत्यु होगी।' ठीक यही दशा आज के समाज के कर्णधारों की है। वे टूटते बिखरते पारिवारों, बेटों-बेटियों को देख रहे हैं, कारण भी जान रहे हैं पर मोह निद्रा यह है कि यह विकार उनके अपनों को स्पर्श नहीं करेगा। यह खामख्याली है, दिवा स्वप्न है। इससे पूर्व कि बायोलॉजीकल माता-पिता की खोज, डी.एन.ए. टेस्टिंग समाज में रोजमर्रा का अंग बनें परिवारों को पुनः संस्कार केन्द्र बनाने पर ध्यान दें। शिक्षणालय, शैक्षिक गुणवत्ता के साथ चारित्रिक उत्कर्ष के जनक भी बनें। दूसरे शब्दों में स्मार्ट सिटी संस्कार सिटी भी बने।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

महर्षि दयानन्द को नमन

दयानन्द की मोहब्बत को,
दिल से न भुला देना
टंकारा चले आना।।
कण-कण में समाई है
माटी में महक उनकी
'डेमी' में वो 'नहाता' था
तुम भी नहा लेना।।
'योग' ध्यान करना है
राम गुफा चले आना
ऋषि-मुनियों की भूमि है
आबू-राज चले आना।।
वेद ज्ञान की तमन्ना
मथुरा चले आना
विरजानन्द की कुटिया है
यमुना में नहा लेना।।
पाखण्ड खण्डनी फहराई जहाँ
मोहन आश्रम चले आना
कुम्भ के मेले में
गंगा में नहा लेना।।
सत्यार्थप्रकाश की रचना तो
नवलखा में रचाई थी
महर्षि का पुरुषार्थ देखने
उदयपुर चले आना।।
शास्त्रार्थ महारथी में शान थी
काशी में शान थी
सच्चे शिव के दर्शन को
काशी शास्त्रार्थ में चले आना।।
जीवन-ज्योति जलाई थी
वेदों की ज्योति जलाकर के
महर्षि दयानन्द को नमन करने
'आर्येश' अजमेर चले आना।।

– डॉ. स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
मनन आश्रम, पिण्डवाड़ा
चलभाष– ०९४१३२६६२४५

सत्यार्थप्रकाश पहेली-२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	त	■	■	२	द	■	३	मा	३	■
■	४		य ४	■	५ अ	५	■	■	६	च ६
७		७ स्मृ	७	■	■	८	ष्टि	८		८ द्ध

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. किस कार्य को सदैव के लिए छोड़ देवें?
२. धर्म का निश्चय किस से होता है?
३. देव, विद्वान् और माता-पितादि की सेवा में क्या न करें?
४. भिक्षावृत्ति कौन नहीं करता?
५. पर्वतादि में धूम को देख किसका अनुमान होता है?
६. परीक्षा कितने प्रकार की होती है?
७. जो वेद और वेदानुकूल आप्त पुरुषों के किये शास्त्रों का अपमान करता है, उस वेदनिन्दक नास्तिक को जाति, पंक्ति और देश से बाह्य कर देना चाहिये। यह किस शास्त्र का वक्तव्य है?
८. कोई कहे कि- बिना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ तो यह कथन कैसा है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २० का सही उत्तर

१. सोलह	२. तीन	३. चार सौ	४. उत्तम
५. इन्द्रियाँ	६. वृद्धि	७. यौवनावस्था	८. मन की वृत्ति

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक नि:शुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०१५

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सद्भाव और सत्कर्म से ही,
होता है उत्कर्ष।
साकार होते हैं सपने सब और,
मिलता है हर क्षण हर्ष।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १६ पर देखें।

ऋषि निर्वाण-दिवस पर विशेष

नवजागरण के पुरोधा ऋषि दयानन्द

भारतीय इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी का समय महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इतिहासकारों ने इसे पुनर्जागरण काल कहा है। इस काल में अनेक महापुरुष इस धरा पर अवतीर्ण हुए। ऋषि दयानन्द एक महान् प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष थे जिन्होंने धर्म, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में नवचेतना का संचार किया। भारत के पुनर्जागरण तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों के संदर्भ में उनकी गौरवशालिनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत के पुनरुत्थान और विश्व मानवता के कल्याण की सर्वांगीण योजना प्रस्तुत करने वाले एकमात्र महापुरुष महर्षि दयानन्द ही थे। वेदशास्त्रों के गंभीर विद्वान्, महान् सुधारक, राष्ट्रवादी तथा प्रगतिशील चिन्तक थे। उनका साहित्य भी विशाल, महान् तथा उच्चकोटि का है। वे अपने आप में एक संस्था थे। उन्होंने जीवन के इतने पक्षों पर अतुलनीय कार्य किया है जो कई व्यक्ति भी मिलकर नहीं कर सकते। तत्कालीन भारत में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में वे सफल हुए। उन्होंने देश, समाज तथा विश्वमानव की सभी समस्याओं तथा प्रश्नों का सतर्क समाधान समग्र दृष्टि से प्रस्तुत किया। अपने नवजागरण के आन्दोलन का नेतृत्व उन्होंने भारतीय तत्वचिन्तन तथा वैदिक दर्शन के आधार पर किया।

ऋषि दयानन्द के कार्यों पर दृष्टि डालने से पूर्व उस समय के भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक दशा को जानना जरूरी है। इस समय तक भारत राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर विघटित और मूल्यों की दृष्टि से खोखला हो चुका था। १८५७ के स्वाधीनता संग्राम

के असफल हो जाने पर भारत में अंग्रेजी शासन की नींव पहले की अपेक्षा और भी सुदृढ़ हो गई थी। शताब्दियों की राजनीतिक पराधीनता ने भारतवासियों को दुर्बलता, अज्ञानता, दरिद्रता, हीनभावना जैसे विकारों में डुबा रखा था। प्राचीन वैभव दुर्दिन के कालावरण से धूमिल था। धर्म की जगह अन्धविश्वास, नैतिकता के नाम पर थोथा कर्मकाण्ड और रूढ़ियों से ग्रस्त भारत का समाज बना हुआ था। अज्ञान, अशिक्षा का साम्राज्य था। वेदों का सत्यस्वरूप सघन अन्धकार में विलुप्त हो चुका था। भारत की राजशक्ति व क्षात्रबल एक विदेशी जाति के सम्मुख परास्त हो गए थे। अंग्रेजों के आर्थिक षड्यंत्रों तथा शोषण ने भारत के उद्योगों और कृषि को पूर्णतः धवस्त कर दिया था। भारत में भारतीयों को आजीविका कमाना कठिन हो गया था। फलतः कम मजदूरी दर पर मॉरीशस, त्रिनिदाद आदि ब्रिटिश उपनिवेशों में उन्हें ले जाया गया, जहाँ वे गुलामी का जीवन व्यतीत करने पर विवश थे। उस समय की दयनीय आर्थिक दशा ने भारत को निहायत कमजोर कर दिया था। इसी प्रकार धार्मिक दृष्टि से भी हिन्दू धर्म पूर्णत विश्रृंखलित था। अनेक मत-मतान्तरों का प्रचलन था। एक सर्वमान्य धर्मग्रन्थ के अभाव में तथा विश्व की सर्वोच्चशक्ति के स्वरूप के विषय में एकमत्य न होने के कारण, उन्नीसवीं सदी का हिन्दू धर्म मत-मतान्तरों का समुच्चय मात्र था। उसे ईसाई और इस्लाम के समान एक धर्म नहीं माना जा सकता था। विभिन्न सम्प्रदायों के मन्तव्य, सिद्धान्त और अनुष्ठान, कर्मकाण्ड, वास्तविक वैदिक धर्म से भिन्न तो थे ही उनमें ऐसे अन्धविश्वास, विकृतियों का समावेश भी था जो कलंक था। इसी प्रकार भारत की सामाजिक अवस्था भी बहुत खराब थी। जाति-पाति, ऊँच-नीच, छूत-अछूत के विचार भारतीय समाज को घुन की तरह लग गए थे। जात-पात के इस विकृत स्वरूप के कारण हिन्दुओं को एक जाति नहीं कहा जा सकता था। उनका निर्माण ऐसी बहुत सी जातियों व उपजातियों से मिलकर हुआ था, जिनमें न एकानुभूति थी, न परस्पर व्यवहार था और न जिनके लोग एक साथ मिलकर उठ बैठ सकते थे। स्त्रियों की दशा भी कम शोचनीय नहीं थी। उनके लिए विद्या के द्वार बन्द हो चुके

थे। कुछ अपवादों को छोड़कर स्त्रियाँ प्रायः निरक्षर हुआ करती थीं। पर्दे की प्रथा उत्तर भारत में सर्वत्र प्रचलित थी। बाल-विवाह भारत के सभी धर्मों जातियों में हो रहे थे। विधवा-विवाह निषिद्ध था। उधर सती-प्रथा भी अभिशाप बनी हुई थी। कितनी ही विधवाओं को पति के साथ जबरदस्ती जला दिया जाता था। इस प्रकार उन्नीसवीं सदी के भारत की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी। एक धर्म, एक भाषा के नाम पर एक सूत्रता का तार सर्वथा छिन्न-भिन्न था।

इसी पृष्ठभूमि पर ऋषि दयानन्द ने जो नवजागरण का शंख फूँका, उसमें वे मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सफल हुए। उनके संदेश से भारतीय जनता को गौरव और स्वाभिमान से जाग्रत करते हुए उन्होंने बताया कि आपका यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। आपका नाम आर्य है, जिसका मतलब उत्तम पुरुष है। सृष्टि से लेकर पाँच सहस्र वर्ष पूर्व तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अब अभाग्योदय से विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहे हैं। ऋषि दयानन्द ने प्राचीन भारत की गौरव-गरिमा, पूर्वजों, ऋषि-महर्षियों, चक्रवर्ती सम्राटों की झलक दिखाकर भारतीय सन्तति को जो सिर झुका कर जी रही थी, स्वाभिमान से खड़ा कर दिया। साथ ही विधर्मियों को शास्त्रार्थ की चुनौती देकर उनके छक्के छुड़ाने के साथ उन्हें आर्य धर्म की श्रेष्ठता का भी कायल बना दिया। उन्होंने निर्भीक घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और विश्व की समस्याओं का समाधान वेद मार्ग पर चल कर ही संभव है? विशृंखलित हिन्दू समाज को उद्‌बोधित किया कि वे वेद को अपना धर्मग्रन्थ मानें और 'ओ३म्' नाम से विश्व की सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर का स्मरण करें। 'ओ३म्' और 'वेद' के आधार पर हिन्दू धर्म के सब सम्प्रदायों को एक सूत्र में संगठित किया जा सकता है। उन्होंने वेदों को सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ प्रतिपादित किया और उनके पठन-पाठन पर अत्यधिक जोर दिया। इस प्रकार भारतीय समाज को एक ठोस व सुदृढ़ आधार पर स्थापित करने का एक क्रियात्मक उपाय प्रस्तुत कर दिया।

भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए उन्होंने विशिष्ट ढंग से कार्य किया। उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ़ गया। ऋषि दयानन्द ने स्वराज्य, साम्राज्य और सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की चर्चा उस समय की, जबकि स्वराज्य का विचार भी किसी के दिमाग में पैदा नहीं हुआ था। लाखों लोगों के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने अभूतपूर्व क्रान्ति की।

उन्होंने रूढ़िग्रस्त जाति-पाँति का विरोध करते हुए बताया कि वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म और स्वभाव के अनुसार समाज का विभाजन है। जिस-जिस व्यक्ति में जिस-जिस वर्ण के गुण कर्म हों उसको उस-उस वर्ण का अधिकार देना चाहिए चाहे उसका जन्म किसी भी कुल में हुआ हो। विद्या और धर्म के प्रचार का काम ब्राह्मण का है क्योंकि वे पूर्णतः विद्यावान और धार्मिक होने से उस काम को यथायोग्य कर सकते हैं। क्षत्रिय को राज्य के अधिकार देने से राज्य की हानि या विघ्न नहीं होता। उद्योग, कृषि, व्यापार वैश्यों के अधिकार में देने से वे इस काम को अच्छी प्रकार कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने शूद्र वर्ण में उन लोगों को रखा है जो शिक्षा का समुचित अवसर प्राप्त करके भी अयोग्य रह जाए। उनके अनुसार सबको शिक्षा का समान अवसर मिलना चाहिए। सेवा का अधिकार शूद्र को है क्योंकि वह विद्यारहित होने से विज्ञान सम्बन्धी काम कुछ भी नहीं कर सकता किन्तु शरीर के सब काम कर सकता है। शूद्रों के विषय

में ऋषि दयानन्द ने लिखा है- शूद्र सब सेवाओं में चतुर, पाकविद्या में निपुण, अतिप्रेम से सेवा कार्य करे और उसी से अपनी आजीविका करे, और अन्य वर्णस्थ लोग उनके

खान-पान, वस्त्र, स्थान, विवाहादि के जो कुछ व्यय हो सब कुछ देवे। जिस रूप में ऋषि दयानन्द ने चातुर्वर्ण्य का

प्रतिपादन किया है, उसमें छुआछूत का कोई स्थान नहीं है।

स्त्रियों की दशा सुधारने में भी ऋषि दयानन्द ने भरसक प्रयत्न किया। उन्होंने न केवल स्त्रियों को अध्ययन का अधिकार दिलाया वरन् वेदाधिकार से भी उन्हें गौरवान्वित किया। उनका कहना था- स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूज्य है।

ऋषि दयानन्द ने स्त्रीशिक्षा, शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली और देश की एक राष्ट्रभाषा के रूप में देवनागरी में लिखित हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का युग प्रवर्तक घोष किया। वे हिन्दी को आर्य भाषा कहते थे। आधुनिक युग में केवल ऋषि दयानन्द सरस्वती ने ऐसी शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार शिक्षा प्राप्त कर भारतीय विद्यार्थी जहाँ नए ज्ञान विज्ञान से पूर्ण परिचय प्राप्त कर सकता था, वहाँ साथ ही अपनी भाषा, संस्कृति और धर्म का पूरा ज्ञान प्राप्त कर भारतीयता पर गर्व कर सकता था। पठन-पाठन विधि में ऋषि दयानन्द ने पृथिवी से लेके आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत् सीखने, बीजगणित, अंकगणित, भूगोल खगोल विद्या का ज्ञान प्राप्त करने और यंत्रकला एवं शिल्प आदि का अभ्यास कराने की व्यवस्था दी थी। ऋषि दयानन्द विभिन्न विषयों के साथ-साथ सदाचार विद्यानुराग, शिष्टाचार जैसे सद्गुणों को संगीत आदि ललित कलाओं, शरीर विज्ञान, पदार्थ विज्ञान आदि विज्ञानों, कला कौशल और राष्ट्रीय भावना समाज सुधार एवं लोकोपचार जैसे सद्भावों को सुरक्षित स्थान दिया है। शिक्षा जगत् उस समय एक महती क्रान्ति थी।

ऋषि दयानन्द ने विश्व कल्याण की योजना बनाई। वेद के आधार पर एक विस्तृत संस्कार व सुधार की योजना को कार्यान्वित करने से पूर्व उनके वास्तविक स्वरूप को, उनके अर्थ को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक था, जो ऋषि दयानन्द ने कर दिखाया। उन्होंने बताया कि वेद समस्त आध्यात्मिक व भौतिक विद्याओं का मूल है। वेदों के ज्ञान का प्रकाश सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के अन्तःकरणों में मानवमात्र के ज्ञान व कल्याण के लिए किया गया। सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने के कारण वेद स्वतः प्रमाण हैं। उनमें सारा ज्ञान विज्ञान बीज रूप में विद्यमान है। उनके वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए प्राचीन ऋषि मुनियों के मार्ग पर चलना चाहिए, जिनके आधार पर प्राचीन ऋषियों ने सत्यों की खोज की।

वेद सार्वजनिक हैं, सार्वभौम हैं। उनमें किसी व्यक्ति, देश, जाति तथा काल का इतिहास नहीं है। वैदिक संस्कृति सार्वभौम संस्कृति है, इसे भारतीय संस्कृति तो इसलिए कहते हैं क्योंकि भारत के लोगों ने इस संस्कृति की विशेष रूप से रक्षा की है और इसे अपने जीवन में अपनाया है। ऋषि दयानन्द महान् देशभक्त थे और भारत को आर्यावर्त को अपने प्राचीन गौरवमय स्वरूप में लाने के लिए सतत् प्रयत्नशील थे। वो चाहते थे कि भारत फिर से विश्वगुरु बने, धनधान्य सम्पन्न राष्ट्र बने, जो कि पहले सोने की चिड़िया कहलाता था। उन्होंने आर्यावर्त को सच्चा पारसमणि बताया जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। किन्तु साथ ही उनका उद्देश्य मानवमात्र को श्रेष्ठ व उन्नत बनाने का भी था। उन्होंने आर्य समाज का उद्देश्य बताते हुए लिखा है-

'संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'

निश्चय ही ऋषि दयानन्द मनु, व्यास, याज्ञवल्क्य और जैमिनी की प्रोज्ज्वल परम्पराओं के प्रस्तोता थे। वे उन्नीसवीं शताब्दी के महर्षि थे। वे आर्ष धर्मद्रष्टा, अप्रतिम धर्माचार्य और धर्म संशोधक, महान् समाज संस्कारक तथा राष्ट्र एवं मानव जाति के सर्वविध मंगल विधायक महापुरुष थे। उनके बताये मार्ग पर चलने से ही देश, समाज तथा विश्व का पूर्ण हित हो सकता है।

डॉ. मन्जुलता विद्यार्थी
अध्यक्षा, आर्य समाज, अकोला

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

१४ नवम्बर बाल दिवस के अवसर पर

कोमलता और विश्वास का संगम कैसे इसे निर्माण करें हम

आचार्य उमाशंकर शास्त्री

मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषोवेद।।

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उन का हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिये (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्'**। धन्य! वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे। – स्वामी दयानन्द सरस्वती

जब बच्चा इस दुनिया में आता है तो उसकी चेतना कोरे कागज जैसी होती है। दुनिया की हर चीज उसके लिए नई होती है। उसका कोमल स्वभाव कदम-कदम पर ठोकरें खाता है। उसकी चेतना हर जगह सौन्दर्य-सामन्जस्य आदि ही देखना चाहती है, पर उसे दिखाई क्या देता है? माँ-बाप के झगड़े, लोगों के बुरे व्यवहार। वह विद्यालय जाता है, वहाँ भी वही किस्सा। वह जिन लोगों को मान की दृष्टि से देखता है उनमें छेद ही छेद हैं, वह जिसकी ओर नजर डालता है उसी के अन्दर ऐसी चीजें दिखाई देती हैं जिन्हें देखकर उसे चोट लगती है। इन सब चीजों को देखकर उसकी चेतना भी

पथराती जाती है। वह यह मानने लग जाता है कि यही जीवन है। सत्य, सौन्दर्य, सद्व्यवहार आदि केवल पुस्तकों के लिए हैं, सफल जीवन में इनके लिए कोई स्थान नहीं है। एक बार इस तरह के विचार बैठ जाते हैं तो बालक उस दिशा में अति शुरू कर देता है। उसके पास उपयोगिता, आवश्यकता आदि के माप तो होते नहीं, वह यही मान लेता है कि चालाकी, धूर्तता आदि ही जीवन को सफल बनाने वाली चीजें हैं इनमें ही पारंगत होना चाहिए।

बालक के अन्दर विश्वास का तत्व बहुत मजबूत होता है। उसे माँ-बाप पर विश्वास होता है, बड़े भाई-बहिन पर विश्वास होता है, अध्यापकों पर विश्वास होता है। परन्तु यह विश्वास काँच की तरह नाजुक होता है जिसमें जरा-सी ठेस से तरेड़ आ जाती है। बालक का विश्वास ही उससे उनके साहस भरे कार्य करवा सकता है। शरीर को स्वस्थ और सक्षम रखता है और असंभव को संभव बना सकता है।

जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, वैसे-वैसे बड़ों के गुण, सावधानी, सतर्कता, सुरक्षा का भाव उसके अन्दर आते जाते हैं और शरीय में भय घर कर लेता है। जहाँ बालक टूटी हड्डी के साथ भी खेलकूद में रह सकता है वहाँ बड़े होकर जरा-सी खरोंच पर भी दवाई और पट्टी की जरूरत पड़ती है। जो बच्चों का भला चाहते हैं उन्हें बच्चों को बहुत ज्यादा सावधान और सतर्क या समझदार बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि उनकी जीवनशक्ति ठीक पटरी पर बैठा देनी चाहिए जिससे दुर्घटना भी न हो और शक्ति का अपव्यय भी न हो।

अध्यापकों और परिवार के बड़ों को हमेशा इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि बच्चों के आगे कभी गप न हांकें। झूठी बात का उन पर बड़ा बुरा असर होता है। बच्चे नाना प्रकार के ऊटपटांग प्रश्न करते हैं। अगर हमने गलत उत्तर दे दिया तो एक न एक दिन तो बच्चे को पता लग ही जायेगा। वह इसके लिए हमें कभी क्षमा नहीं करेगा, हमारे

लिए उसके मन में मान न रहेगा। इससे अच्छा है कि कह दें 'मुझे नहीं मालूम'। बच्चा प्रश्नों की झड़ी लगा दे तो भी धीरज बनाए रखिए। क्रोध बच्चों के नाजुक हृदय की कली को चोट पहुँचाएगा और उसके मन में हमारे लिए एक प्रकार की घृणा-सी हो जाएगी। अतः बच्चों के साथ व्यवहार या वार्तालाप करते समय अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है। उसके कोमल मनोभाव व विश्वास को ठेस न पहुँचे इसकी चिन्ता प्रत्येक माता-पिता और गुरु को करनी चाहिए।

ज्ञानेन्द्रियाँ ही ज्ञान के द्वार हैं। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान से बालक के अन्तःकरण का विकास होता है। अन्तःकरण का विश्वास करें, क्योंकि इसके माध्यम से परमेश्वर हमारा दिशा-निर्देशन करता है। अन्तःकरण भावों को सजाता, सँवारता और संस्कारित करता है। इसके विकास का माध्यम क्या हो? एकात्मता अनुभूति का विषय है, बौद्धिक व्यायाम नहीं। इसका सम्बन्ध स्वाध्याय, अध्ययन, पाण्डित्य से नहीं अपितु भावों के जागरण एवं उनके परिमार्जन से है। इसकी विधि क्या हो? माता बालक के अन्तःकरण को विकसित करने के लिए क्या करे? गुरु अपने पाठ्यक्रम में इसका समावेश कैसे करे? इस समस्या का उत्तर है- कथा कहानी। कथा भाव-धारा को जन्म देती है, श्रोता उसके रसास्वादन में तन्मय हो जाता है। भावों का शोधन परिमार्जन होता है, प्रवृत्तियों का मार्गान्तरीकरण होता है तथा कृतियाँ स्वतः ही इससे प्रभावित होती हैं। इसी कारण बालशिक्षा का मुख्य आधार कथा है।

भारतीय जनजीवन में कथा का महत्व अत्यधिक दिख पड़ता है। अध्यात्म विषय गूढ़ है, शुष्क है, नीरस है परन्तु इस देश के मनीषियों ने इसे अनपढ़ मूर्ख, सामान्य से सामान्य व्यक्ति के जीवन में सफलतापूर्वक उतार कर दिखला दिया है। भिखारी दान माँगते समय भौतिक समृद्धि की नश्वरता और पुण्य के अक्षय लाभ की चर्चा करता है, तो नारी सतीत्व की, और जन सामान्य पाप-पुण्य की, धर्म-अधर्म की चर्चा करता दिखता है। यह ज्ञान उसे किस विधि से दिया गया? उत्तर है- कथा-कहानी। रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि सब में कथा संग्रह हैं। भारतीय कथा साहित्य जगत् को अनुपम देन है। अतः बालक के अन्तःकरण के विकास के लिए सफल कथाकार बनें, यह आज की महती आवश्यकता है।

कथा कैसी हो? कैसे कही जावे? कथा की प्रथम शर्त है कि वह अत्यन्त भावपूर्ण हो। उसे सुनते-सुनते बालक उसमें

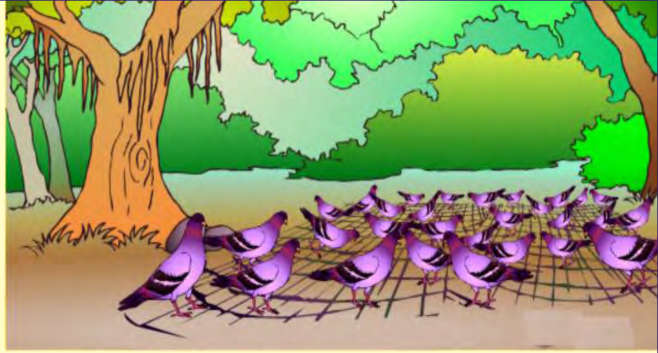

तन्मय हो जावे। यह एकाग्रता उसकी मानसिक शक्तियों को उजागर कर देगी। उत्सुकता, ग्राह्यशक्ति, कल्पनाशक्ति धधक उठेगी। भावयुक्त होने के साथ-साथ कथा की भाषा श्रोता के मानसिक स्तर की होना आवश्यक है। बालक के मानसिक स्तर के अनुरूप कथा तथा प्रस्तुतीकरण की भाषा का चयन अत्यावश्यक है। कथा की तीसरी विशेषता होनी चाहिए कथा का निष्कर्षयुक्त होना। निष्कर्षहीन कथाएँ कहना निरर्थक है। केवल मनोरंजन, वेदनायुक्त अथवा सुखान्त की श्रेणियों में आबद्ध करके कहना घातक होगा। इसलिए अपने देश में विचारोत्तेजक गुण प्रधान बोध कथाएँ, आदि कहने की परम्परा विद्यमान है। निरक्षर हिन्दू स्त्रियाँ भी उन्हें जानती हैं। पंचतंत्र हितोपदेश की अमर कथाएँ, रामायण व महाभारत की कथाएँ उनके जीते जागते उदाहरण हैं। बच्चों के स्तरानुकूल दादी-नानी के द्वारा कहे जाने वाली पशु-पक्षियों एवं परियों की कहानियाँ हम सबों ने बचपन में सुनी होंगीं। कथाओं की उत्सुकता बनाये रखने के लिए उसमें तारतम्यता एवं अखण्डता भी होनी चाहिए। कथा से कथा निकलती रहे तो कथा का धारा-प्रवाह अखण्ड अविभाज्य स्वरूप बन जायेगा तथा उसके स्मृतिचिह्न बालक के मानसपटल पर अमिट प्रभाव अंकित कर देंगे। इससे उसके चरित्र में निखार आयेगा।

सद्गुणों के इस विकास क्रम में बालक के हृदय में पूर्वजों और परम्पराओं के प्रति स्वाभिमान भाव का जागरण अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। अतः महापुरुषों के जीवन प्रसंगों को सुनाना उपयोगी रहेगा।

ऐतिहासिक घटनाक्रम जहाँ उनके निकट पहुँचता है वहीं प्रेरक प्रसंग उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर देता है। वे महापुरुष थे। हम सामान्य हैं। हम यह कैसे कर सकेंगे? यह भाव मन में व्याप्त न हो अतः सामान्य व्यक्तियों के द्वारा असामान्य कार्यों के सम्पादन की कथा कहना अपना अलग ही प्रभाव छोड़ती है। इस प्रकार कथा के द्वारा बालक के अन्तःकरण को विकसित कर उसमें मानवता का तत्व विकसित करना माता, पिता व गुरु का परम कर्तव्य है।

विश्वास ही बच्चों के व्यक्तित्व को सजाते सँवारते हैं, बच्चों को सुरक्षित रखते हैं। बच्चों के सम्बन्ध में अभिभावकों को अनावश्यक रूप से चिन्तित होने से बचाते हैं।

इस सम्बन्ध में व्यावहारिक आदर्श है कि प्रारम्भ से ही बच्चों में विश्वास पैदा करें। उसे विश्वास में लें। बच्चों के लाड़-प्यार से वशीभूत होकर जो अभिभावक बच्चों की उचित-अनुचित फरमाइशें पूरी करते हैं, बच्चों के दुराग्रहों के सामने समर्पित होते हैं अथवा बच्चों के अनुचित व्यवहारों को अनदेखा करते हैं, अपनी पारिवारिक सीमाओं से ऊपर बच्चों की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ने देते हैं वे ही कालान्तर में पश्चाताप करते हैं। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि बालकों को सदैव जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराते रहें। अभावों पर विजय प्राप्त करने के लिए सदैव संघर्षरत रहें और बच्चों को अपना सहयोगी बनायें।

बच्चों में कैसे विश्वास पैदा करें? बच्चों में विश्वास पैदा करने का सरल उपाय यह है कि बच्चों से ऐसी कोई बात न कहें जिसे आप पूरा न कर सकते हों। झूठी बात, बनावटी आचरण, झूठे आश्वासन बच्चों को न दें। यहाँ तक कि दूसरों से भी इस प्रकार का आचरण न करें। हमेशा ऐसी बातें कहें जिसे आप पूरा कर सकते हों। अतः बच्चों से किए गए वायदे पूरे करें। अपने किसी भी आचरण के लिए बच्चों की उपस्थिति को महत्व दें। बच्चों में निहित क्षमताओं पर विश्वास करें उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित करें। ऐसे कार्यों में अभिभावक स्वयं बच्चों के साथ रहें। बच्चों को अयोग्य, छोटा, कमजोर, नासमझ मानना उचित नहीं। अतः बच्चों को अप्रशिक्षित शुद्ध जीवात्मा मानकर उसे सुनियोजित ढंग से प्रशिक्षित कर '**मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद**' को चरितार्थ करें।

प्राचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती,बाल मंदिर
तेघड़ा, बेगूसराय, बिहार, पिन ८५११३३
चलभाष- ०९९०५४१६८९९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र आधी कीमत में

₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
☞ जनवरी १६ से दिसम्बर १६ तक सत्यार्थ सौरभ के सभी १२ अंकों में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश पहेलियों को हल करें।
☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
☞ ऊपरलिखित उपबन्धों के अधीन पूरे १२ महीने शुद्ध हल भेजने वालों में से एक विजेता का चयन लॉटरी के द्वारा होगा।
☞ विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

हम अल्पज्ञ जीवात्मा हैं इस कारण हमारा ज्ञान अल्प होता है। ईश्वर जिसने इस सृष्टि को बनाया व इसका संचालन कर रहा है, वह हमारी तरह अल्पज्ञ नहीं अपितु सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ का अर्थ होता है कि जिसे सब प्रकार का पूर्ण ज्ञान हो। जो अतीत के बारे में भी जानता हो, वर्तमान के बारे में भी और जीवों के कर्मों की अपेक्षा से भविष्य के विषय में भी ज्ञान रखता हो। अब यह कहा जा सकता है कि ईश्वर आँखों से दिखाई तो देता नहीं फिर उसकी सत्ता और उसे सर्वज्ञ कैसे मान सकते हैं? इस पर यह जानना उचित होगा कि क्या हम स्वयं व अपने निकटस्थ परिवारजनों व मित्रों आदि को देख पाते हैं? उत्तर हाँ में मिलता है। हमारा कहना है कि हम जो देखते हैं वह मनुष्यों का भौतिक शरीर होता है। हमारे पारिवारिक जन व मित्र आदि भौतिक शरीर नहीं हैं अपितु एक चेतन तत्व 'जीवात्मा' हैं। जीवात्मा एक अति सूक्ष्म तत्व है जो सूक्ष्म होने के कारण आँखों से दिखाई नहीं देता। जब हम अपनी व दूसरों के 'सत्य पदार्थ' जीवात्माओं को ही नहीं देख पाते तो फिर जीवात्मा से भी अत्यन्त सूक्ष्म व निराकार तत्व ईश्वर को न देख पाने के कारण उसके अस्तित्व से इनकार करना बुद्धिमत्ता नहीं है।

हाँ, ईश्वर को, उसके गुण, कर्म, स्वभाव व उसकी कृति 'सृष्टि' को देखकर जाना जा सकता है। उसको जानने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान के साथ हमें पूर्वाग्रहों, जो हमने इस जन्म व पूर्व जन्मों से अपने चित्त में धारण किये हुए हैं, उनसे मुक्त भी होना पड़ेगा। ईश्वर व सृष्टिविषयक समस्त आवश्यक ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में 'चार वेद' के रूप में हमें प्रदान किया था। यह चारों वेद और इनका ज्ञान आज भी हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ के कारण हमें उपलब्ध है जिनकी सहायता से ईश्वर को जाना जा सकता है।

दूसरा साधन वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' भी ईश्वर, जीव व प्रकृति के ज्ञान में सहायक है। अन्य अनेक ग्रन्थ यथा उपनिषद्, दर्शन आदि भी सहायक हैं। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में वेदों के सिद्धान्तों को बहुत ही सरल रूप में बोलचाल की भाषा आर्यभाषा हिन्दी में समझाया गया है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान इसके पाठक को हो जाता है व हमने भी किया है। वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द जी ने बताया है कि ईश्वर कि जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य-न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसका ऐसा ही स्वरूप वेदों में वर्णित है। सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द ने यह सिद्धान्त भी बताया है कि रचना को देखकर रचयिता का ज्ञान होता है। इस सिद्धान्त से सृष्टि की रचना को देखकर इसके रचयिता 'ईश्वर' का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त सभी अपौरुषेय कार्य जिसमें एक सुन्दर व मनमोहक फूल भी होता है, अपने रचयिता ईश्वर का परिचय दे रहा होता है। यह ऐसा ही है जैसे कि किसी बच्चे को देखकर उसके माता-पिता तथा धुवें को देखकर अग्नि का ज्ञान होता है। ईश्वर के बारे में विस्तार से जानने के लिए उपनिषद्, दर्शन तथा वेद आदि का अध्ययन करना अपेक्षित है।

अब ईश्वर के त्रिकालदर्शी होने पर विचार करते हैं। त्रिकाल भूत, वर्तमान तथा भविष्य काल को कहते हैं। भूत जो बीत गया है तथा वर्तमान जो अब, इस समय का काल है। इनका पूरा पूरा ज्ञान ईश्वर को होता है। इसका अर्थ है कि सृष्टि विषय व जीवों के अतीत व वर्तमान के सभी कर्मों का पूरा पूरा ज्ञान ईश्वर को सदा सर्वदा रहता है। अब तीसरा भविष्य काल है। इसके भी दो भाग किये जा सकते हैं। एक तो जीवात्माओं के भविष्य में किये जाने वाले कर्म हैं। दूसरा इससे भिन्न सृष्टि के निर्माण व संचालन आदि ईश्वरीय कार्य हैं, इनका पूरा पूरा ज्ञान ईश्वर को रहता है कि उसे कब क्या करना है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और उनका फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था

में परतन्त्र है। अतः परमात्मा जीवों के भविष्य के कर्मों को पूर्व नहीं जानता, कर्म करने पर साथ-साथ जानता है। शनैः शनैः वर्तमान भूतकाल में बदलता रहता है और भविष्य वर्तमान बनता जाता है। भविष्य के वर्तमान होने के साथ ईश्वर को जीवों के कर्मों का साथ-साथ ज्ञान होता जाता है। इसी को जीवों के कर्मों की अपेक्षा से ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहा जाता है। इसका अर्थ है कि भविष्य में जीवों के द्वारा कर्म किये जाने पर ईश्वर उनको जानता है। कर्म करने से पूर्व ईश्वर को उनके होने न होने का ज्ञान नहीं होता।

ईश्वर त्रिकालदर्शी है या नहीं वा किस प्रकार से है, इस पर महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में प्रकाश डाला है। इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले उन्होंने जीव और ईश्वर के स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव से कैसे हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत किया है। यह भी जानने योग्य हैं, अतः इसे प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लिखते हैं- 'दोनों चेतनस्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सब को नियम में रखना, जीवों को पाप-पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति, उन का पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे बुरे काम हैं।। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं। और जीव के-

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगम्।।

– न्याय.।अ. १।आ. १।सू. १०

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः।
सुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिंगानि।।

– वै.।अ. ३।आ. २।सू.४

दोनों सूत्रों में (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा, वैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल (सुख) आनन्द (दुःख) विलाप, अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहिचानना ये तुल्य हैं परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना (निमेष) आँख को मीचना (उन्मेष) आँख को खोलना (जीवन) प्राण का धारण करना (मनः) निश्चय स्मरण और अहंकार करना, (गति) चलना (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल (व भौतिक पदार्थ) नहीं है।

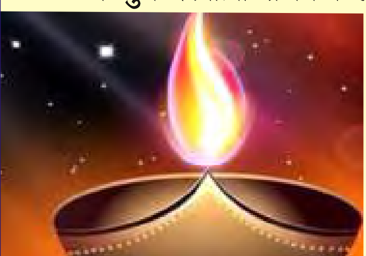

जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ कर चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हो और न होने से न हो, वे गुण उसी के होते हैं।

जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान गुण द्वारा होता है।''

इसके पश्चात् महर्षि दयानन्द प्रश्न उठाते हैं कि परमेश्वर त्रिकालदर्शी है, इससे भविष्यत् की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा। इस से जीव स्वतन्त्र नहीं और जीव को ईश्वर दण्ड भी नहीं दे सकता क्योंकि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है, वैसा व वही कर्म जीव करता है। इसका उत्तर महर्षि दयानन्द यह देते हैं कि ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है। इसलिए कि जो होकर न रहे वह भूतकाल और न होके होवे वह भविष्यत्काल कहाता है। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है। इसलिये परमेश्वर का ज्ञान सदा एकरस, अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत, भविष्यत् जीवों के लिए हैं। हाँ, जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है, स्वतः नहीं। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान के ज्ञान और फल देने से ईश्वर स्वतन्त्र और जीव किंचित् वर्तमान और (भविष्यत्) कर्म करने में स्वतन्त्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है। दोनों ज्ञान उस के सत्य हैं। क्या कर्मज्ञान सच्चा और दण्डज्ञान मिथ्या कभी हो सकता है? इसलिये इस में कोई भी दोष नहीं आता।

हम समझते हैं कि ईश्वर के त्रिकालदर्शी होने विषयक स्थिति स्पष्ट हो गई है। हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं परन्तु अपने सभी पुण्य-पाप कर्मों के अनुसार पुरस्कार व दण्ड रूपी फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से सुख व दुःख पाते हैं। हम कुछ भी कर लें, कितना दान, पुण्य, धर्मानुष्ठान करें करायें, परन्तु किये हुए कर्मों के फल तो अवश्यमेव भोगने ही होंगे। 'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' यदि ऐसा है तो क्यों न इश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुसार इश्वरोपासना व यज्ञादि कर्मों को करते हुए हम अपने वर्तमान व भावी जीवन को सुखद बनायें और धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को सिद्ध करें। गायत्री मन्त्र की तीन महाव्याहृतियों में से एक 'भूः' में ईश्वर को हमें प्राणों से भी प्रिय बताया गया है। आइये, हम उसे अपना प्राण प्रिय मित्र बनाकर वेदानुकूल निश्चिन्त जीवन व्यतीत करें जैसा कि महर्षि दयानन्द आदि ऋषि व विद्वानों ने किया था।

१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष-०९४१२९८५१२१

गतांक से आगे ....

ऋषि दयानन्द के साहित्य का भाषागत अध्ययन

डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

ऋषि दयानन्द की भाषा के गुण- ऋषि दयानन्द की हिन्दी विशुद्ध सांस्कृतिक तथा प्रभावशाली है। उनकी भाषा विषय को एकदम स्पष्ट रूप में हमारे सामने रखती है। वह छन्द और अलंकारों के बन्धन से सर्वथा मुक्त है, ताकि अभिप्राय शीघ्र समझ में आ जाए और अर्थ का अनर्थ न हो सके। व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों का भी अभाव है। भावों की ओजस्विता ने भाषा को ओजपूर्ण तथा प्रभावशाली बना दिया है। उनकी भाषा को हम ओजपूर्ण, व्यंग्यप्रबलता तथा प्रवाह से भरपूर पाते हैं, वह निर्दोष तथा मंजी हुई है। उनकी भाषा में भाषा के सर्वोपरि गुण सरलता, प्रसाद तथा प्रवाह पाये जाते हैं। यहाँ हम उनके साहित्य की भाषा में पाये जाने वाले विभिन्न गुणों का अध्ययन करेंगे।

ओज- ऋषि दयानन्द का उद्देश्य भारतीयों में स्वदेश, स्वधर्म एवं स्वजाति का गौरव और देशाभिमान उत्पन्न करना था, इससे उनकी भाषा भी ओजस्वी हो गई है। हिन्दी भाषी प्रदेश में पुनर्जागरण का नेतृत्व ऋषि दयानन्द ने किया था। वे भारतीय समाज को क्रान्ति के वेग से सुधारना चाहते थे और इसके लिए उन्हें एक साथ विभिन्न मत मतान्तरों के मोर्चों पर लड़ना पड़ा। श्री रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है- 'रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं हुआ। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्वमानवता के नेता भी थे। इसी कारण ऋषि दयानन्द की भाषा में क्रान्तिकारी व्यक्तित्व का ओज प्रखरता से दिखाई देता है।' मूर्तिपूजा के कारण अकर्मण्य बने समाज के प्रति उनका क्षोभ ओजस्वी भाषा में व्यक्त हुआ है- 'जब संवत् १९१४ के वर्ष में तोपों के मारे मंदिर, मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं, तब मूर्ति कहाँ गई थीं? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टाँग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो उनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला! यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाये, उसके शरणागत क्यों न मारे जावें?

सरलता, सुबोधता व स्पष्टता- ऋषि दयानन्द की भाषा का दूसरा गुण सरलता व स्पष्टता था। उनका लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य तक वैदिक धर्म का सन्देश पहुँचाना था, अतः उन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया जिसे साधारण व्यक्ति भी सुगमता से समझ सके। डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे ने लिखा है- 'स्वामी दयानन्द सरस्वती की भाषा में सर्वत्र स्पष्टता विद्यमान है। उनके ग्रन्थों में कहीं-कहीं दिखाई देनेवाली क्लिष्टता विचारों की गहनता के कारण है न कि अस्पष्टता के कारण। अतः उनकी भाषा में प्रसाद गुण सर्वत्र बड़ी मात्रा में पाया जाता है। इसका सुन्दर उदाहरण भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति पर लिखा गया निम्नलिखित अवतरण है- 'देखो! कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश आये यूरोपियनों को हुए और आज तक ये लोग मोटे कपड़े आदि पहरते हैं जैसाकि स्वदेश में पहिरते थे, परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल-चलन नहीं छोड़ा और तुममें से बहुत से लोगों ने उनका अनुकरण कर लिया, इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान ठहरते हैं। अनुकरण करना किसी बुद्धिमान् का काम नहीं।' इस प्रकार की भाषा को पढ़कर ही श्री विनायक दामोदर सावरकर ने कहा था- ऐसी सरल हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बने, जिसमें ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का निर्माण किया है।

प्रवाह- ऋषि दयानन्द अपने समय के सर्वोत्तम वक्ताओं में से थे। वे श्रोताओं को अपने विचारों और भावों के प्रवाह में बहा ले जाने में पारंगत थे। यह विशेषता उनके लेखन में भी बड़े सुन्दर रूप में दिखाई देती है। नर-नारी की समानता का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने कहा है- 'ईश्वर के समीप स्त्री पुरुष दोनों बराबर हैं, क्योंकि वह न्यायकारी है, उसमें पक्षपात का लेश भी नहीं है। जब पुरुषों को पुनर्विवाह की आज्ञा दी जावे तो स्त्रियों को दूसरे विवाह से क्यों रोका जावे? पुरुष अपनी इच्छानुसार जितनी चाहे उतनी स्त्रियाँ कर सकता है। देश, काल, पात्र और शास्त्र का कोई बन्धन नहीं रहा। क्या यह अन्याय नहीं? क्या यह अधर्म नहीं?

चित्रात्मकता- ऋषि दयानन्द ने जहाँ वर्णनात्मक शैली में लिखा है, वहाँ चित्रात्मकता का गुण उभरकर सामने आ जाता है। उनकी आत्मकथा में चित्रात्मकता का गुण सर्वत्र उपलब्ध होता है। प्रस्तुत उद्धरण में उभरता रेखाचित्र द्रष्टव्य है-

'..........मैं इसमें से घायल और अधमरा होकर निकला। उस समय सर्वत्र अन्धकार छाया हुआ था। तम के अतिरिक्त

कुछ दृष्टिगोचर न होता था। यद्यपि मार्ग रुका हुआ था और दिखाई न देता था तो भी मैं आगे बढ़ने के विचार को छोड़ न सकता था- अन्त में मैं एक ऐसे भयानक स्थान में पहुँचा कि जहाँ चारों ओर उच्चशैल और पर्वत थे, जिन पर घनी औषधियाँ और वनस्पतियाँ उगी हुई थीं। शीघ्र ही मुझे कई झोंपड़ियों और टूटे-फूटे घरों के द्वारों और छिद्रों में से टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई देता था जो आते हुए पथिक को स्वागत और बधाई के शब्द सुनाता हुआ प्रतीत होता था। मैंने वहाँ एक विशाल वृक्ष के नीचे जो एक झोंपड़ी के ऊपर फैला हुआ था रात्रि व्यतीत की।' इस प्रकार चित्रमयता उनकी भाषा की अपनी एक अन्य विशेषता है।

खड़ी बोली का परिष्कृत एवं प्रांजलस्वरूप- यद्यपि ऋषि दयानन्द अहिन्दी भाषा प्रदेश से आये थे और उन्होंने हिन्दी सीखकर लिखना प्रारम्भ किया था, किन्तु उनकी भाषा उत्तरोत्तर परिष्कृत प्रांजल होती चली गई। जैसाकि सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण की भूमिका से स्पष्ट है, उन्होंने केवल ८ वर्षों में इतनी हिन्दी सीख ली कि इस ग्रन्थ की भाषा का व्याकरणसम्मत परिष्कार संभव हो सका। यह बड़ी उपलब्धि थी। उनका आत्मकथन थियोसोफिस्ट पत्र के नवम्बर व दिसम्बर १८८० के अंकों में छपा था। आज से सौ वर्ष से भी अधिक पहले की भाषा में ऋषि दयानन्द की खड़ी बोली का परिष्कृत एवं प्रांजल रूप देखते ही बनता है- 'उस समय मैंने यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि समस्त देशों में और विशेषतः पर्वतीय स्थलों में अवश्य ऐसे योगी पुरुषों का अन्वेषण करुँगा। एक दिन सूर्योदय के होते ही मैं अपनी यात्रा पर चल पड़ा और पर्वत की उपत्यका में होता हुआ अलखनन्दा नदी के तट पर जा पहुँचा। मेरे मन में उस नदी को पार करने की किंचित इच्छा न थी, क्योंकि मैंने उस नदी के दूसरी ओर एक बड़ा ग्राम माना नामक देखा, अतः अभी उस पर्वत की उपत्यका में ही अपनी गति रखकर नदी के वेग के साथ-साथ मैं जंगल की ओर हो लिया। पर्वत, मार्ग और टीले आदि सब हिम के वस्त्र पहने हुए थे। बहुत घनी हिम उनके ऊपर थी। अतः अलखनन्दा नदी के स्रोत तक पहुँचने में मुझको अत्यन्त कष्ट उठाने पड़े।'

भावानुरूप सशक्त भाषा- ऋषि दयानन्द की भाषा उनके विचारों और भावों को बड़े सशक्त रूप में अभिव्यक्त करने में सफल हुई है। विचारों को दृढ़ता से अभिव्यक्त करती हुई भाषा का नमूना देखने योग्य है-

'किसी का सामर्थ्य नहीं है कि जो अविद्वान् होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के स्वरूप को यथावत् जानकर सिद्ध कर सके। इसलिए सबको उचित है कि इनकी सिद्धि के लिए विद्या का अभ्यास तन, मन और धन से किया और कराया करे।'

दूसरी ओर उनकी भावविह्लता को व्यक्त करती भावुक भाषा का नमूना भी द्रष्टव्य है- 'हे मांसाहारियों। तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों के मांस को भी छोड़ोगे वा नहीं? हे परमेश्वर! तुम क्यों इन पशुओं पर जो कि विना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करते? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इनके लिए तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता?'

वास्तव में ऋषि दयानन्द के साहित्य से गद्य को भावाभिव्यंजना की अपारशक्ति मिली। डॉ. शिवकरणसिंह ने भी लिखा है- 'धर्म प्रचारक दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी गद्य को भावाभिव्यंजना और कटाक्ष की शक्ति दी।' क्रमशः....

- श्रुति-सौरभ
इंजीनियर्स कॉलोनी, धनवन्तरी नगर
उमरी, अकोला- ४४४००५

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर

गुजरात में चला पाटीदारों का आन्दोलन सचमुच स्वागत योग्य है, क्योंकि यह आरक्षण जैसी सड़ी गली व्यवस्था को खत्म करने का कारण बनेगा। यह आन्दोलन बड़े मजबूत तर्क पर आधारित है। यह कहता है कि यदि आप अन्य पिछड़ों को आरक्षण दे रहे हों तो हमें भी क्यों नहीं? या तो हमें भी आरक्षण दो या फिर किसी को मत दो। इसने आरक्षण के पिटारे को खोलकर रख दिया है। आरक्षण को लेकर अहमदाबाद की बड़ी सभा ने नेताओं के छक्के छुड़ा दिए। देश के सारे नेता वे जो अपने आपको तीसमारखाँ समझते हैं नहीं जानते कि क्या करें? गुजरात के पटेलों का विरोध या समर्थन! जो विरोधी नेता मोदी विरोधी हैं, उन्होंने पटेलों की माँग का तत्काल समर्थन कर दिया, लेकिन जिन्होंने सारे मामले पर दूरंदेशी से सोच विचार किया है, उन्होंने सोचा कि पटेल लोग गरीबों का आटा गीला कर रहे हैं। सरकारी नौकरियों में कुल २७ प्रतिशत आरक्षण है और सैंकड़ों जातियाँ पहले से उसे लपटने पर आमादा हैं और अब ये भी कूद पड़े। पटेलों के कूदने से आरक्षण की रेवड़ियों में बंदरबाँट बढ़ेगी और यादव व कुर्मियों वगैरह का नुकसान हो जायेगा। पटेल आन्दोलन करने के लिए सभी पहले से आरक्षित पिछड़े अब उठ खड़े होंगे। पटेल आन्दोलन का अर्थ होगा पिछड़ों का पिछड़ों के विरुद्ध गृहयुद्ध। पिछड़ों का कुल आरक्षण तो २७ प्रतिशत है। यह प्रतिशत तो बढ़ने वाला नहीं है। इस पर संवैधानिक पाबन्दी है। अगड़ों की सीटों में तो कोई कमी होने वाली नहीं है। जो भी घाटा होगा वह उन्हीं पिछड़ों का होगा, जो पहले से आरक्षित हैं, इसलिए हार्दिक पटेल की भोपाल की सभा फुस्स हो गई है। अखिल भारतीय आरक्षण गुर्जर संगठन ने भी उसका विरोध किया है। उसका कहना है कि इन पटेलों ने हमेशा गुर्जर आरक्षण का विरोध किया है। वास्तव में १९७७ के आसपास जब गुजरात में खाम (क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी, मुस्लिम) अभियान चला तो इन जातियों को आरक्षण देने का सबसे तगड़ा विरोध पटेलों ने किया। लगभग १०० लोग मारे भी गए। माधवसिंह सोलंकी के नेतृत्व में खाम जातियों ने कांग्रेस को अपूर्व विजय भी दिलवाई। पटेलों ने भाजपा का साथ दिया। मोदी की जीतों का आधार भी वे ही रहे लेकिन अब वे बगावत में उठ खड़े हुए हैं। यदि पटेल आन्दोलन को भाजपा ठीक से संभाल नहीं पाई तो गुजरात में तो उसका सूपड़ा साफ ही समझ लीजिए, सारे भारत में भी उसे अब जाटों, गुर्जरों, कुर्मियों, कम्मओं, रेड्डियों, वोकालिग्गाओं आदि का मुकाबला करना पड़ेगा। ये सब जातियाँ मूलतः खेतिहर हैं, ग्रामीण हैं, गरीब हैं, शिक्षा और नौकरियों में पिछड़ी हैं लेकिन इन्हीं जातियों में ५-१० प्रतिशत ऐसे लोग भी हैं जो राजनीति, व्यवसाय, नौकरियों और शिक्षा में अग्रणी हैं। वे इतने अग्रणी हैं कि बड़े-बड़े अगड़े उनके आगे पानी भरें। गुजरात के पटेल का मतलब है चौधरी! गाँव में जो सबसे समर्थ हो उसे ही पटेल कहा जाता है। पटेल अगर सचमुच पिछड़े होते तो गुजरात के इतने मुख्यमंत्री पटेल कैसे होते? विधानसभा और संसद में दर्जनों पटेल कैसे होते? आज से ७०-८० वर्ष पहले सरदार वल्लभ भाई पटेल जिस मुकाम पर पहुँचे, कैसे पहुँचते? आज अमेरिका में जितने भी प्रवासी भारतीय रहते हैं, उनमें पटेलों की संख्या सबसे ज्यादा है। अमेरिका में मोटेलों के मालिकों में पटेलों की संख्या इतनी ज्यादा है कि वहाँ मोटेल को लोग पोटेल बोलते हैं। इन पटेलों को आरक्षण की जरूरत क्यों महसूस हो रही है?

वे इसलिए आरक्षण माँग रहे हैं कि माले मुफ्त दिले बेरहम? जब सब बहती गंगा में डुबकी लगा रहे हैं तो वे क्यों न लगायें? गुजरात और केन्द्र की सरकार दोनों ही हतप्रभ हैं।

एक ने गोली चला दी और दूसरी सिर्फ जबान चलाकर शान्ति की अपील कर रही है। आरक्षण की माँग का कोई जबाव दोनों के पास नहीं है। वरना पटेलों और आरक्षण माँगने वाली नई जातियों से वे पूछते कि तुम अपनी खेती और काम धन्धे छोड़कर नौकरी, जिसे अधम चाकरी कहा जाता है क्यों करना चाहते हो? और फिर यह बताओ कि हर साल ऊँचे दर्जे की कुल कितनी नई सरकारी नौकरियाँ निकलती हैं? सिर्फ पाँच दस हजार! हर प्रदेश में कुछ सौ! इनका २७ प्रतिशत कितना हुआ? यानी दो चार दर्जन नौकरियों के लिए हमारे स्वाभिमानी पटेल लोग भीख का पल्ला क्यों पसारें? जो पिछड़े आरक्षित नौकरियाँ झपट लेते हैं, वे अक्सर मालदार, ओहदेदार, ताकतवार और प्रभावशाली पिछड़ों के बेटे-बेटियाँ ही होते हैं। उन्हें ही सर्वोच्च न्यायालय ने समाज की क्रीमी लेयर कहा है। ये मलाई पर हाथ साफ करने वाले मुट्ठीभर नेता अपनी जाति के लाखों लोगों को आन्दोलन की भट्टी में झोंक देते हैं। यह नौकरियों में आरक्षण अयोग्यता और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। यदि आरक्षण लाभकर होता तो पिछले सात दशकों में इसकी जरूरत पूरी हो जाती। यदि डॉ. अम्बेडकर और डॉ. लोहिया आज जिन्दा होते तो इस आरक्षण की भ्रष्ट व्यवस्था को उखाड़ फेंकते।

बधाई

समोआ, अपिया में आयोजित पाँचवें कामनवैल्थ यूथ खेलों में भारत की तीरंदाज, भरतपुर राजस्थान की रहने वाली तथा आर्ष कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की छात्रा प्राची सिंह ने अपने गुरुकुल, आर्यसमाज व भारत का नाम रोशन करते हुए तीरंदाजी की उक्त प्रतियोगिता में व्यक्तिगत श्रेणी में बांग्ला देश की नंदिनी खान को पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त कर सुनहरा इतिहास रच दिया। हम सत्यार्थ सौरभ के सभी सदस्य इस उपलब्धि पर गर्व की अनुभूति करते हुए प्राची सिंह के साथ आचार्या सुकामा तथा सुमेधा जी को बधाई देते हैं तथा प्राची सिंह के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

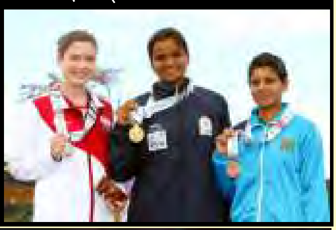

दीपावली एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप एक जलता रहे

पर्व है पुरुषार्थ का,
दीप के दिव्यार्थ का,
देहरी पर दीप एक जलता रहे,
अंधकार से युद्ध यह चलता रहे,
हारेगी हर बार अंधियारे की घोर-कालिमा,
जीतेगी जगमग उजियारे की स्वर्ण-लालिमा,
दीप ही ज्योति का प्रथम तीर्थ है,
कायम रहे इसका अर्थ, वरना व्यर्थ है,
आशीषों की मधुर छाँव इसे दे दीजिए,
प्रार्थना-शुभकामना हमारी ले लीजिए !
झिलमिल रोशनी में
निवेदित अविरल शुभकामना
आस्था के आलोक में
आदरयुक्त मंगल भावना ! !

बाबा साहब ने बताया कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

अंग्रेजों ने भारतीयों को हीन तथा यूरोपीय लोगों को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए यह भ्रम फैलाया कि आर्य भारत के रहने वाले नहीं थे तथा उन्होंने भारत पर आक्रमण कर यहाँ के मूल निवासियों को गुलाम बना लिया। इसी के साथ अंग्रेजों ने यह तर्क भी दिया कि आर्य और मुलसमान जैसे आक्रमणकारी थे, वैसे ही अंग्रेज भी हैं और जब आर्य और मुसलमान भारत में स्थायी रूप से बस गए तो अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई क्यों लड़ी जा रही है? यह देश धर्मशाला है कोई भी यहाँ आकर बस सकता है। न तो यह कोई राष्ट्र है और न ही यहाँ कोई राष्ट्रीयता है- यह प्रचार भी अंग्रेजों ने किया।

दुर्भाग्य से देश के तथाकथित बुद्धिजीवी लोग अंग्रेजों के इस दुष्प्रचार का शिकार हो गए और मानने लगे कि आर्य सचमुच भारत के बाहर से आये। बाबा साहब अम्बेडकर ने अंग्रेजों की इस धूर्तता को स्पष्ट किया था। शुद्ध तर्क की कसौटी पर तथा सप्रमाण उन्होंने प्रतिपादित किया कि आर्य नाम से कोई जाति कभी नहीं रही और जिनको आर्य कहा जाता है वे वस्तुतः भारत के ही रहने वाले थे।

सोचा समझा षड्यंत्र

डॉ. अम्बेडकर ने पश्चिम के इस विचार की तीव्र आलोचना ही नहीं की वरन् इसे झूठ का पुलिन्दा भी बताया। उन्होंने इस विषय का बहुत गम्भीरता से अध्ययन किया और आधुनिक खोजों तथा उपलब्ध शास्त्रों के आधार से यह प्रमाणित किया कि पश्चिमी विचारकों का उक्त मत मनगढ़न्त तथा आधारहीन है। यह सब कुछ भारतीय जनमानस को स्वाभिमानशून्य बनाने के उद्देश्य से किया गया था। दुःख तो इस बात का है कि भारत के ही अनेक विद्वान् लोग इसी भ्रम के जाल में फँस गए परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा स्वामी विवेकानन्द सदृश लोगों ने साधिकार घोषणा की कि आर्य इसी देश के मूल निवासी थे। डॉ. अम्बेडकर ने इस बात को एक वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत आधार दिया। उनकी यह घोषणा कि 'आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं और कहीं बाहर से नहीं आये तथा शूद्र भी आर्य ही हैं' आज से लगभग ८० वर्ष पूर्व की गई थी। आज इतने समय पश्चात् भारत एवं भारत के बाहर भी अनेक विद्वान् अपने-अपने तर्क लेकर खड़े हैं और डॉ. अम्बेडकर की घोषणा को आधार प्रदान कर रहे हैं।

डॉ. अम्बेडकर उस समय की प्रचलित धारणा के अनुसार लिखते हैं कि पश्चिमीजगत् के विचारकों के पास एक निश्चित विचार है। यद्यपि वे आपस में भी उन विचारों पर एकमत नहीं हैं फिर भी संक्षेप में उनके मूल विचार निम्न हैं -

१. वे लोग जिन्होंने वैदिक साहित्य की रचना की आर्य थे।
२. आर्य बाहर से आये और उन्होंने भारत पर चढ़ाई की।
३. भारत के मूल निवासी दास और दस्यु थे जो कि आर्यों से भिन्न थे।
४. आर्य गोरे रंग के तथा दास तथा दस्यु काले रंगे के थे।
५. आर्यों ने दास और दस्युओं को जीत लिया।
६. विजय के पश्चात् दास और दस्यु शूद्र बना दिए गए।
७. आर्यों ने रंगों के आधार पर चातुर्वर्ण्य की स्थापना की।

डॉ. साहब ने अपने तथ्यपूर्ण विश्लेषण के आधार पर कहा कि उपर्युक्त सभी बातें गलत हैं।

आर्य कोई जाति नहीं है

डॉ. अम्बेडकर पश्चिम के लोगों की धूर्तता का खुलासा करते हुए कहते हैं पहले यह सिद्धान्त स्वीकार किया गया और बाद में उसको प्रमाणित करने के लिए तथ्य खोजे गए। अंग्रेजों ने आर्यों को एक पृथक् वंश कहकर बड़ा अनर्थ किया है। आर्य कोई एक वंश या जाति नहीं थी। यह तो गुणवाचक शब्द था और उसी रूप में यह प्रयोग हुआ था। आर्य वंश के सिद्धान्त के उद्‌गम के संबंध में डॉ. अम्बेडकर कहते हैं 'आर्य वंश का सिद्धान्त कल्पना से अधिक कुछ भी नहीं है। यह डॉ. बॉप की भाषा विज्ञान से संबंधित निकली पुस्तक कम्पेरिटिव ग्रामर के ऊपर आधारित है। इस पुस्तक में डॉ. बॉप ने यह दिखलाया है कि यूरोप की अधिकांश तथा एशिया की कुछ भाषाएँ किसी एक प्राचीन पैतृक बोली से निकली हैं। उनका यह मानना है कि यूरोपीय तथा एशिया की ये सभी भाषाएँ मिलकर इण्डोजर्मनिक कही जानी

चाहिए। सामूहिक रूप से इन सभी को आर्य भाषाएँ कहा गया है। यह कल्पना ही आर्य वंश के सिद्धान्त का आधार बनी। डॉ.अम्बेडकर आगे समझाते हैं 'इसके आधार पर ही यह सोचा गया कि यदि यह सभी भाषाएँ किसी एक ही पैतृक भाषा से निकली हैं तो ऐसा भी एक वंश (रेस) होना चाहिए जो इस पैतृक भाषा को बोलता था। इस मातृभाषा को आर्यभाषा तथा इसको बोलने वालों को आर्य वंश (रेस) कह दिया गया।

मैक्समूलर जिसने वेदों का और भारतीय संस्कृति का विशद् अध्ययन किया था ने भी अन्त में इसी बात का समर्थन किया कि आर्य कोई वंश नहीं था।

'आर्य' शब्द का वंश के रूप में प्रयोग नहीं हुआ है इसके लिए दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद का उदाहरण देते हुए डॉ. अम्बेडकर कहते हैं- 'वैदिक साहित्य का परीक्षण करने पर यह पता चलता है कि ऋग्वेद में दो शब्दों का प्रयोग मिलता है एक तो 'अर्य' और दूसरा 'आर्य'। ऋग्वेद में अर्य शब्द ७६ बार प्रयोग में आया है। इस शब्द का प्रयोग चार विभिन्न अर्थों में हुआ है १. शत्रु २. प्रतिष्ठित व्यक्ति ३.भारत वर्ष का नाम ४. स्वामी या नागरिक। आर्य शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में ३१ स्थानों पर आया है। परन्तु इनमें एक भी स्थान पर वंश के अर्थों में प्रयोग नहीं हुआ है। इन सभी विचारों के आधार पर निर्विवाद रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि अर्य तथा आर्य जो कि वेदों में उल्लिखित हैं का कहीं भी वंशगत भाव से उपयोग नहीं किया गया।'

रंगाधारित भेद-भाव आर्य सिद्धान्त नहीं

आर्यों के बाहर से आने का भ्रम

डॉ. अम्बेडकर आगे बढ़ते हैं और कहते हैं कि अब हम पश्चिमी विचारकों के उस प्रश्न पर विचार करते हैं जिसके अनुसार यह कहा जाता है कि आर्य बाहर से आये और उन्होंने यहाँ के स्थानीय लोगों को पराजित किया।

अनेक उदाहरणों के आधार पर डॉ. अम्बेडकर कहते हैं- 'कौन-सा प्रमाण है जो यह कहता है कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और यहाँ की जनजातियों को गुलाम बनाया। जहाँ तक ऋग्वेद का प्रश्न है कहीं पर एक तिलभर भी प्रमाण ऐसा नहीं मिलता जो यह बतलाता हो कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया था।' वे श्री पी.टी. श्रीनिवास आयंगर का उदाहरण देते हैं- 'साावधनी पूर्वक मंत्रों का निरीक्षण करने पर यह बात ध्यान में आती है कि जहाँ भी आर्य, दास और दस्यु शब्दों का प्रयोग हुआ है वह वंश के बोध में नहीं वरन् सांस्कृतिक विचार आदि से संबंधित ही है। ये शब्द अधिकांश रूप से ऋग्वेद संहिता में पाये जाते हैं जहाँ पर आर्य शब्द मंत्रों में ३१ बार आता है जबकि कुल आये शब्दों की संख्या ३५३६७२ है। इतनी कम संख्या में आर्य शब्द की आवृत्ति अपने आप में यह सिद्ध करती है कि वह जाति जो अपने आपको आर्य कहती है। आक्रमण करने वाली और जीतकर स्थानीय नागरिकों को समाप्त करने वाली नहीं थी जीतने वाली जाति स्वाभाविक रूप से अपनी उपलब्धियों का वर्णन अहंकार के साथ निरन्तर करती।

दुनिया के सबसे पुराने ग्रन्थ वेद हैं। उनका प्रमाण देते हुए डॉ. अम्बेडकर निष्कर्ष देते हैं कि जहाँ तक वैदिक साहित्य के प्रमाणों का प्रश्न है ये पूर्ण रूप से इस सिद्धान्त के विरोधी हैं कि आर्यों का मूल स्थान भारत के बाहर कहीं था। वह भाषा जिसमें सप्त नदियों का वर्णन ऋग्वेद में किया गया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। डॉ. डी.एस. त्रिवेदी कहते हैं कि 'नदियों को सम्बोधित करते समय मेरी गंगा, मेरी यमुना, मेरी सरस्वती आदि कहा गया है। कोई विदेशी इन पवित्र नदियों को इतने पारिवारिक एवं आत्मीय भाव से कभी भी नहीं पुकारेगा, जब तक कि बड़े पुराने सम्बन्धों के कारण इनसे भावात्मक भाव विकसित न हो गए हों।'

आर्यों के बाहर से आने की कहानी क्यों गढ़ी गई ?

आर्य बाहर से आये इस मूर्खतापूर्ण पश्चिमी सिद्धान्त के ऊपर डॉ.अम्बेडकर लिखते हैं- 'आर्यों के आक्रमण का सिद्धान्त एक खोज है। यह खोज आवश्यक हो गई थी क्योंकि इसके पीछे पश्चिमी जगत् की वह दम्भपूर्ण तथा अर्थहीन कल्पना थी कि १. यूरोप के इण्डो जर्मन ही आज के आर्य लोगों के शुद्धतम प्रतिनिधि हैं। २. इनका मूल स्थान भी यूरोप में ही कहीं है। इन कल्पनाओं में से प्रश्न उठा कि आर्य बोली भारत में किस प्रकार आयी- और तब इस प्रश्न का उत्तर तो केवल यही दिया जा सकता था कि आर्य लोग कहीं बाहर आये होंगे और इस प्रकार आर्यों के आक्रमण के सिद्धान्त की खोज की आवश्यकता अनुभव की गई। बाबा साहब कहते हैं- 'पश्चिमी लोगों ने एक और मनगढ़न्त कहानी बनाई। वह यह है कि आर्य एक श्रेष्ठ वंश

था और इस सिद्धान्त का मूल उस विश्वास में है कि आर्य एक यूरोपीय वंश है तथा ऐसा माना गया कि यूरोपीय वंश होने के कारण वे एशिया के अन्य वंशों से श्रेष्ठतर है। एक बार श्रेष्ठता की कल्पना कर ली गई तो अगले तर्क का विषय यही था कि इस श्रेष्ठता को प्रतिस्थापित किया जाए और फिर यह मानकर कि आर्यों की स्थानीय जातियों पर विजय ही श्रेष्ठता का सबसे अच्छा प्रमाणपत्र हो सकता है, पश्चिमी लेखकों द्वारा आर्यों के भारत पर आक्रमण तथा उनकी दास और दस्युओं पर विजय की कहानी का आविष्कार किया गया।

डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि एक कल्पना यह भी गढ़ी गई कि यूरोपीय लोगों का रंग गोरा होता है और आर्यों का रंग भी गोरा माना गया है। अतः आर्यवंश के लोग यूरोपीय उद्गम से आये हैं। बाहर से आये और उन गोरे आर्यों ने भारत में आने के पश्चात् रंग के आधार पर चातुर्वण्य की व्यवस्था बनाई। इस प्रकार वर्ण का अर्थ रंग से लिया गया। डॉ. साहब कहते हैं- 'यह सभी धारणाएँ आधारहीन हैं। यह कहना कि आर्य बाहर से आये थे और उन्होंने भारत के ऊपर आक्रमण किया था, यह ठीक नहीं है तथा दूसरी ओर यह धारणा कि दास तथा दस्यु भारत की मूल जनजातियाँ हैं, सफेद झूठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

एक झूठी कल्पना है

अन्त में डॉ. साहब निष्कर्ष निकालते हुए कहते हैं कि किस प्रकार पश्चिम के लोगों की झूठी मनगढ़न्त कल्पना ने कि आर्य बाहर से आये और वे भारत पर आक्रमणकारी थे, विज्ञान के जगत् में विष का कार्य किया है। वास्तव में यह पश्चिमी लेखकों का सम्पूर्ण मानवता के प्रति किया गया एक अक्षम्य अपराध है। विज्ञान के जगत् में परिकल्पनाओं का अपना एक विशेष महत्व है परन्तु यदि झूठी बातों को सिद्ध करने के लिए उनका उपयोग किया जाएगा तो परिणाम भयानक होंगे। प्रो. माइकल फोस्टर का संदर्भ देते हुए डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि-

कल्पना करना विज्ञान के लिए नमक की तरह महत्वपूर्ण है। बिना परिकल्पना के फलदायी खोज नहीं हो सकती लेकिन साथ ही यह भी सत्य है कि जब किसी निश्चित परिकल्पना को सिद्ध करने की इच्छा प्रबल हो उठती है तब यह परिकल्पना विज्ञान के लिए जहर बन जाती है। पश्चिमी जगत् के विद्वानों का यह सिद्धान्त कि आर्य एक वंश है, इस बात को दर्शाने वाला एक सुन्दर उदाहरण है कि परिकल्पना ने विज्ञान के लिए किस प्रकार विष का कार्य किया है।

बाबा साहब कहते हैं- आर्य वंश का सिद्धान्त इतना मूर्खतापूर्ण है कि इसको तो बहुत पूर्व ही समाप्त हो जाना चाहिए था, परन्तु समाप्त होना तो दूर इसने लोगों के ऊपर एक महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ दिया है।

साभार- पाथेय कण

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सत्संग सभा

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर की ओर से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व उपलक्ष्य में सत्संग सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि धर्म की गति अति सूक्ष्म है। धर्म कभी बन्धन में नहीं बांधता, अपितु मुक्त करता है। श्रीकृष्ण हमेशा राष्ट्र-मानव धर्म के पक्ष में खड़े रहे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री सत्यप्रिय शास्त्री ने श्रीकृष्ण को विश्व का सबसे चर्चित व्यक्तित्व बताया। अंत में आर्यसमाज के प्रधान श्री भँवरलाल आर्य ने आभार व्यक्त किया। सारे कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- राम दयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

आपकी Art Gallery और मन्दिर परिसर देखकर मन प्रसन्न हुआ। वेद प्रचार और आर्य समाज का प्रचार तो वैसे भी उस गति व उत्साह से नहीं हो रहा है जिस प्रकार स्वामी जी की इच्छा थी। फिर भी हमें प्रयत्न करना चाहिए। हमारा सुझाव है कि इतने अच्छे व महत्वपूर्ण स्मारक को और अधिक प्रचारित करना चाहिए। इस Tourist स्थान को एक मुख्य आकर्षण के रूप में स्थापित किया जाए। मुख्य सड़क पर स्वामी जी के चित्र के साथ उनका परिचय और कार्य को वर्णित किया जाना चाहिए ताकि लोगों को दूर से ही पता चले कि यहाँ आर्य समाज का कुछ देखने लायक है। प्रतिनिधि ने यहाँ अच्छा विवरण दिया। - संतोष दीवान, गुड़गाँव

निःसन्देह स्वामी जी एवं इनका जीवन परिचय भारतीय जनमानस के लिए प्रेरणास्रोत है और रहेगा। चित्र, लाईट एवं सफाई व्यवस्था बहुत ही सुन्दर। इसके साथ ही यदि पूरी दीर्घा को संगीतमय मन्त्रोच्चारण से भी ध्वनित कर भ्रमण कराया जाए तो यह बहुत ही कर्णप्रिय और सुरुचिकर होगा। - जितेन्द्र कुशवाहा

समाचार

दादा-दादी या नाना-नानी को पत्र लिखें और ईनाम पायें

डाक विभाग द्वारा 'राष्ट्रीय डाक सप्ताह' के दौरान १३ अक्टूबर को संपन्न इस प्रतियोगिता के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर के निदेशक डाक सेवाएँ कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि स्कूली छात्र-छात्राओं में पत्र लेखन के प्रति रुझान उत्पन्न करने तथा फिलेटली के प्रति रुचि जागृत करने हेतु राष्ट्रीय डाक सप्ताह (९-१५ अक्टूबर) के दौरान १३ अक्टूबर को फिलेटली दिवस पर देश में प्रत्येक डाक मण्डल के मुख्यालय पर पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । श्री यादव ने बताया कि प्रविष्टियों का मूल्यांकन मण्डल स्तर पर साहित्यकारों और शिक्षाविदों की कमेटी द्वारा किया जायेगा और प्रथम तीन स्थान पाने वाली प्रविष्टियों को क्रमशः रुपये ५००/- २५१/- व १५१/- और प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया जायेगा।

- कृष्ण कुमार यादव, जोधपुर

गु.हरि. में श्रावणी उपाकर्म व षष्ठ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

श्रावणी पर्व के अवसर पर गुरुकुल हरिपुर में नूतन प्रविष्ट ३० ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल द्वारा पन्द्रह दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। महायज्ञ के कार्यक्रम में श्री ए.बी. स्वामी राज्यसभा सांसद, श्री बसन्त कुमार पण्डा विधायक नुआपड़ा, श्री प्रदीप कुमार नायक, पी.डी. नुआपड़ा मुख्य अभियन्त्री बिजली विभाग नुआपड़ा इत्यादि अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित हुये।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य जी के प्रत्यक्ष सानिध्य व मार्गदर्शन तथा गुरुकुल के आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु, श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी, श्री धर्मराज पुरुषार्थी तथा गुरुकुल के समस्त अधिकारीगणों के पुनीत सहयोग से सम्पन्न हुआ।

वैदिक ज्ञान व अन्य प्रतियोगितायें

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली- ५८, शुक्रवार-शनिवार दिनांक २३-२४ अक्टूबर २०१५ को देशभक्ति गीत व कविता, स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित गीत, भजन व कविता तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

- मृदुला चौहान, संचालिका

आर्यसमाज हिण्डौन सिटी द्वारा कल्याणकारी प्रदूषणनाशक यज्ञ

आर्यसमाज हिण्डौन सिटी (राज.) दिनांक १४.०९.१५ सोमवार से २०.०९.१५ रविवार तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री विनोदचन्द्र जी विद्यालंकार ज्वालापुर, हरिद्वार, श्री ब्रजपाल जी शर्मा कर्मठ कम्हेडा, मुजफ्फरपुर नगर (उ.प्र.) का नागरिक सम्मान सहित अभिनन्दन किया गया। राजस्थान व देश में हिण्डौन का नाम रोशन करने वाली कु. खुशी तिवाडी को श्री कल्याणप्रसाद आर्य की स्मृति में १३ वाँ कल्पना चावला पुरस्कार दिया गया।

देश-विदेश में वैदिक मान्यताओं का प्रचार करने वाले चिन्तक, विचारक, उपदेशक, लेखक डॉ. सोमदेवजी शास्त्री मुम्बई (महा.) तथा उडिया-अंग्रेजी भाषा में निरन्तर लेखनरत चिन्तक-विचारक श्री प्रियव्रतदास जी, भुवनेश्वर का सम्मान किया गया।

- रामबाबू आर्य

दिव्य वैदिक सत्संग समारोह

प्रतिवर्ष की भांति वृष्टि यज्ञ का आयोजन गोमाना, छोटी सादड़ी आर्यसमाज के तत्त्वावधान में मिति श्रावण कृष्ण एकादशी सोमवार दिनांक १०.०८.२०१५ से शनिवार दिनांक १५.०८.२०१५ विक्रम सम्वत् २०७२ तक रखा गया।

इस छः दिवसीय आयोजन से वेद का परिचय प्राप्त हो और वेदज्ञान को जानने की रुचि उत्पन्न हो, इसी उद्देश्य से यह आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. कमल नारायण जी आर्य, सुश्री अंजली आर्या ने प्रेरक उद्बोधन प्रदान किए।

शाहपुरा आर्यसमाज द्वारा वैदिक प्रचार प्रसार

आर्यसमाज द्वारा वैदिक प्रचार प्रसार का कार्यक्रम दयानंद आश्रम (समाज का बगरू) में जलझूलनी समारोह के समय रखा गया।

वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित बेनरों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गयी तथा आकर्षक विद्युत सज्जा भी की गई, जिसे देखने वालों का तांता लगातार बना रहा।

स्वच्छ भारत मिशन अभियान के तहत् शहर को खुले में शौचमुक्त बनाने में तथा आर्यनगरी शाहपुरा को स्वच्छ व सुन्दर बनाने में सहयोग करने हेतु नागरिकों से अपील भी की गई। - सत्यनारायण तोलम्बिया

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान, २५ अक्टूबर, २०१५ को दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशव पुरम्, दिल्ली में श्री आजाद सिंह लाकड़ा, प्रधान, जाट मित्र मण्डल की अध्यक्षता में विशेष विभूतियों का अभिनन्दन किया गया। जिनमें निम्न नाम प्रमुख हैं-

पं. सत्यपाल पथिक (अमृतसर, पंजाब), स्वामी सुधानन्द योगी (अलवर, राजस्थान), डॉ. सरिता आर्या (ऐंचरा कला, जीन्द, हरियाणा), डॉ. कमलेश आर्या (नजीबाबाद, बिजनौर), रणजीत जी आर्य (बरगढ़, उड़ीसा), आचार्या सुमन आर्या (हरिद्वार), श्री बुद्धदेव शास्त्री (बरगढ़, उड़ीसा), श्री वेदपाल जी आर्य (पानीपत, हरियाणा) एवं कुमारी पूनम आर्या (गुप्तकाशी, उत्तराखण्ड)।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, डॉ. धर्मपाल जी आदि उपस्थित थे।

श्रावणी वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज, केसरपुरा रोड़, शिवगंज द्वारा आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम पर २१ से २७ सितम्बर तक यज्ञ एवं भजन प्रवचन का आयोजन रखा गया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य शिवकुमार जी शास्त्री थे।

- लक्ष्मीनारायण गहलोत, मंत्री, आर्यसमाज

आर्यसमाज मानटाउन स.मा. की कार्यकारिणी का चुनाव

संरक्षक - श्री सरस्वती प्रसाद गोयल, प्रधान - डॉ. आर.पी. गुप्ता
मंत्री - रामजी लाल आर्य, कोषाध्यक्ष- सोमेशचन्द्र माहेश्वरी

महिला आर्यसमाज सवाईमाधोपुर चुनाव

प्रधान - श्रीमती मनोहरदेवी गुप्ता, मंत्री - ममता शर्मा
कोषाध्यक्ष - नीलम माहेश्वरी

सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

भारतीय वायुसेना अब महिलाओं को लड़ाकू विमानों की कमान सौंपने की योजना बना रही है। यह जानकारी वायुसेना प्रमुख अरूप राहा ने

दी। भारतीय वायुसेना की ८३वीं वर्षगांठ के जश्न के अवसर पर एयर चीफ मार्शल राहा ने यहाँ कहा, 'हमारे यहाँ महिलाएँ परिवहन विमान और हेलीकॉप्टरों को पहले से ही उड़ा रही हैं। अब भारत की युवा महिलाओं की महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हम उन्हें लड़ाकू विमान इकाई में भी नियुक्त करने की योजना बना रहे हैं।'

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्ता समिति, नई दिल्ली द्वारा उदयपुर में दो दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नवलखा महल गुलाबबाग, उदयपुर में किया गया। माता लीलावन्ती सभागार में आयोजित इस प्रशिक्षण सत्र में न्यास के कार्यकारि

अध्यक्ष श्रीमान् अशोक आर्य व राजस्थान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के निर्देशक श्रीमान् एम.एल. गोयल का सहयोग प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम की मुख्य प्रशिक्षण कर्त्ता श्रीमती इन्द्रमनी जैन ने 'शिशु शिक्षा प्रशिक्षण माड्यूल' पर आधारित प्रशिक्षण को राज्य के १५ स्कूलों की ६० शिक्षिकाओं को दिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य बच्चों की नीव को सुदृढ़ करने का आधार बनाना था।

इस प्रशिक्षण का आयोजन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पानेरी उपवन, फतहपुरा, उदयपुर की प्रधानाध्यापिका श्रीमती नीता गर्ग व उनकी टीम के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज श्री गंगानगर द्वारा राजस्थान के लोकायुक्त न्यायमूर्ति माननीय श्री सज्जन सिंह कोठारी जी का सम्मान किया गया। न्यास परिवार एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार कोठारी साहब को हार्दिक बधाई सम्प्रेषित करता है।

श्रीमती नीता गर्ग को पितृशोक

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उदयपुर की प्रधानाध्यापिका और न्यास से सर्वात्मना जुड़ाव रखने वाली श्रीमती नीता गर्ग के पिता श्री कृष्ण कुमार गुप्ता जी का निधन दिनांक २६ सितम्बर २०१५ को ७८ वर्ष की आयु में सतना, मध्य प्रदेश में हो गया। पितृ वियोग की यह पीड़ा हम सब की सांझी है। हम न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण दुःख के इन क्षणों में संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा परिवारी जनों को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

– अशोक आर्य

प्रतिस्वर

आपके द्वारा भेजा गया मासिक पत्र सत्यार्थ सौरभ का जून २०१५ का अंक मिला, धन्यवाद। वेदसुधा में प्रो. राम विचार का लेख 'धरती पर स्वर्ग' लाजवाब रहा। अशोक आर्य का बेहतरीन लेख 'नो इट्स आल्वेज नॉट योर च्वाइस' पंसद आया हम लेखक के साथ सहमत हैं कि कोई भी व्यक्ति तब तक स्वतंत्र है जब तक उसके द्वारा किया गया कोई काम समाज पर विपरीत प्रभाव नहीं डालता। लेख 'सामवेद ने की कन्या की मांग' जानकारी बढ़ाने वाला था। अश्विनी कुमार का लेख 'क्या अनुछेद ३७० का समर्थन देशद्रोह नहीं' विचारणीय रहा। मेरा मानना है कि धारा ३७० समाप्त करने से एक बार जम्मू कश्मीर में राजनीतिक उबाल आयेगा लेकिन कुछ समय बाद सब शांत हो जायेगा। उसके बाद हम पाकाधिकृत कश्मीर वापिस लेने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। कविता 'वो थे पापा' काबिले तारीफ लगी। पत्रिका के इस अंक की अन्य रचनायें भी इसे चार चाँद लगाने वाली थीं।

– प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

पुस्तक मेला उदयपुर में वैदिक साहित्य भी उपलब्ध

दिनांक ३ अक्टूबर २०१५ से ११ अक्टूबर २०१५ तक जनार्दन राय

नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय परिसर, प्रतापनगर, उदयपुर में आयोजित भव्य पुस्तक मेले में जहाँ अनेक विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें बीसियों पुस्तक स्टॉलों पर उपलब्ध रहीं, वहीं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के द्वारा भी एक स्टॉल लगाया गया। जिसका विधिवत् उद्घाटन श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने किया। उद्घाटन के अवसर पर आर्य समाज, हिरणमगरी के संरक्षक डॉ.अमृत लाल तापड़िया व मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा एवं आर्य समाज समोरबाग से श्री भवानीदास आर्य उपस्थित थे। स्टॉल संचालक श्री रवि के अनुसार वेद, वैदिक साहित्य, आर्ष ग्रन्थों के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय संस्कृति के गौरव को उकेरित करते हुए एवं भारत के उन लाडले सपूतों को समर्पित जिन्होंने कि अपने जीवन को मातृभूमि की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिया, साहित्य में क्रेताओं ने आशातीत रुचि ली। सभी साहित्य १० प्रतिशत छूट के साथ दिया गया जबकि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश ५० प्रतिशत की छूट के साथ चालीस रु. में दिया गया।

– रवि प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - २० के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २०** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री ओम प्रकाश आर्य, बरेली (उ.प्र.), ब्रह्मचारी शिव कुमार सिंह, काजमाबाद (उ.प्र.), कु. दीशिका आर्या, भिवानी (हरि.), श्री मयंक सूद, गुड़गाँव (हरि.), श्री अनिल सिंह, गून (उ. प्र.), श्री प्रेमनारायण जायसवाल, उदयपुर (राज.), श्री धीरज धारवाँ, आष्टा (म.प्र.), श्री दयाल भाई जादव, डिंडोली (गुजरात), श्रीमती उषा आर्या, उदयपुर (राज.), श्रीमती भावना बेन शर्मा, उदयपुर (राज.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

अब तो अलग जगा बाबा!

एक था राजा, शायद भारत के दक्षिण में। एक दिन वह आखेट के लिए जंगल में गया, मार्ग भूल गया। देर हो गई। भूख और प्यास से व्याकुल होने लगा। तभी देखा कि जंगल में एक लकड़हारा लकड़ियाँ काट रहा है। बहुत-से पेड़ कट चुके हैं, थोड़े-से बाकी हैं। उन्हीं में से एक पेड़ की शाखाओं को नीचे गिरा रहा है। राजा ने उसके पास जाकर कहा- 'भाई! मैं बहुत भूखा हूँ। बहुत प्यास लगी है। तुम्हारे पास खाने को कुछ है क्या?'

लकड़हारे ने कहा- 'है, आओ बैठो। दूर उधर एक बावड़ी है। मैं वहाँ से पानी लाता हूँ। तुम यह रोटी खाओ।' और पोटली से निकालकर एक मोटी-सी रोटी उसने राजा के सामने रख दी। थोड़ा-सा शाक भी साथ रख दिया। राजा ने उसको खाया। लकड़हारे का लाया हुआ पानी पिया। शान्त होकर कहा- 'मैं अमुक स्थान का राजा हूँ। घर का मार्ग भूल गया हूँ।' लकड़हारे ने मार्ग बतला दिया। राजा ने कहा- 'कष्ट के समय तुमने मेरी सहायता की। यदि तुमको भी आवश्यकता पड़े तो मेरे समीप आना। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।'

लकड़हारे ने हाथ जोड़कर प्रणाम कर दिया। राजा चले गये। कुछ दिन व्यतीत हो गये। धीरे-धीरे वन में सभी वृक्ष समाप्त हो गये जिसमें लकड़हारा लकड़ी काटकर, कोयले बनाकर बेचता था। अब वह अपनी जीविका चलाये तो कैसे? लाये तो कहाँ से? बहुत दुःखी हो गया। दुःखी चित्त से राजा के पास पहुँचा। सेवकों ने राजा को सूचना दी कि लकड़हारा आपसे मिलना चाहता है। राजा ने सोचा, स्मरण आया कि हाँ, एक लकड़हारे को सहायता देने का वचन दिया था- एक दिन उसने प्राण बचाये थे; बोला, 'उसको अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाकर मेरे समीप लाओ।' सेवकों ने लकड़हारे को स्नान कराया, नवीन वस्त्र पहनाये, राजा के सामने ले आये। राजा ने पूछा- 'क्यों भाई लकड़हारे! क्या बात है? उदास क्यों हो? लकड़हारे ने उत्तर दिया- 'महाराज! जिस वन में से लकड़ियाँ काटता था, समाप्त हो गया। अब जीविका का मेरे पास कोई साधन नहीं। आपकी शरण में आया हूँ कि कोई वन मिले तो मैं भूखा मरने से बच जाऊँ।' राजा ने कहा- 'हो जायेगा यह काम, तुम निश्चिन्त हो जाओ।' उसके चले जाने पर अपने मंत्रियों को बुलाकर परामर्श किया कि इस लकड़हारे को क्या दिया जाय? परामर्श करने के पश्चात् निर्णय हुआ कि शहर के दक्षिण में राजा का चंदन के वृक्षों का जो वन है, वह लकड़हारे को दिया जावे। पदाधिकारियों को बुलाया गया, चन्दन के वृक्षों का वह वन लकड़हारे के नाम कर दिया। उसको सूचना दी गई।

कई वर्ष व्यतीत हो गये। राजा एक दिन अपने महल में बैठे थे कि लकड़हारे का ध्यान आया। प्रसन्नता के साथ उन्होंने सोचा- अब तो लकड़हारा बहुत धनी हो गया होगा। कई भवन तथा महल बनवा लिये होंगे, इसलिए चलकर उसे देखना चाहिये। अपने मंत्रियों को साथ लेकर वह उस वन में गया, जो लकड़हारे को दिया था। किन्तु वहाँ कोई वन ही न था, न चन्दन का कोई वृक्ष। राजा ने घबराकर अपने मंत्रियों से पूछा- 'अरे, वह वन कहाँ है जो लकड़हारे को दिया था? किसी और स्थान पर होगा, तुम मुझे अन्य स्थान पर ले आये हो।' मंत्रियों ने पदाधिकारियों की ओर देखा, पदाधिकारियों ने कागजों की ओर। छानबीन करके बोले- 'महाराज! वह जंगल तो इसी स्थान पर था।'

राजा ने कहा- 'फिर वह गया कहाँ?' खोज करने पर कुछ दूरी पर चन्दन के कुछ वृक्ष दिखाई दिये। उनके पीछे बैठा हुआ लकड़हारा भी दिखाई दिया- निराश और उदास, विचारमग्न। राजा ने उसके पास जाकर पूछा- 'अरे! तू चिन्ता में क्यों है?'

लकड़हारे ने प्रणाम करके कहा- 'अन्नदाता! आपकी कृपा से इतने वर्ष तो कट गये, अब ये पेड़ रह गये हैं। थोड़े दिनों में ये भी समाप्त हो जायेंगे। सोचता हूँ, इसके पश्चात् क्या करूँगा?'

राजा ने आश्चर्यपूर्वक कहा- 'वृक्ष तो थोड़े-से रह गये हैं, शेष वृक्षों का क्या किया तूने?'

लकड़हारा बोला- 'नित्य लकड़ी काटता हूँ, कोयला बनाता हूँ और बाजार में जाकर बेच देता हूँ।'

राजा ने दुःख के साथ कहा- 'अरे भाग्यहीन! यह तुमने क्या किया? वह चन्दन की लकड़ी थी! जलाकर कोयला क्यों बना दिया?'

लकड़हारा बोला- 'चन्दन की लकड़ी क्या होती है?'

राजा बोला- 'अच्छा होता, यदि तू जानता! अभी एक लकड़ी काट ला कोई दो-तीन फुट की और ले जा इसको बाजार में। हाँ, कोयला न

बनाना इसका!' लकड़हारे ने वैसा ही किया। एक दुकानदार ने देखा- लकड़ी तो है असली चन्दन की और लकड़हारा है गँवार। बोला- 'क्या लेगा इसका?'
लकड़हारे ने पूछा- 'तुम क्या दोगे?' दुकानदार ने कहा- 'एक रुपया।' लकड़हारा आश्चर्य से चिल्लाकर बोला- 'क्या? एक रुपया?' उसका तात्पर्य था कि इस छोटी-सी लकड़ी का एक रुपया!
दुकानदार समझा, यह जानता है; बोला- 'दो रुपये।' लकड़हारा और भी आश्चर्य से चिल्लाकर बोला- 'दो रुपये ?' दुकानदार ने घबराकर कहा- 'अच्छा चार रुपये।' लकड़हारा चिल्लाया- 'अच्छा चार रुपये?' कुछ दूरी पर एक दुकानदार खड़ा था। उसने देखा कि पहला दुकानदार एक मूल्यवान वस्तु को कौड़ियों के भाव खरीद रहा है। उसे पुकारकर कहा- 'अरे इधर आ। मैं दस रुपये दूँगा।'
लकड़हारे ने दस का नाम सुना तो सिर पकड़कर बैठ गया। चिल्ला उठा, दहाड़ें मारकर रोने लगा। अब उसे ज्ञात हुआ कि जिस लकड़ी का वह कोयला बनाकर बेचता रहा है, कितनी मूल्यवान् थी और कितनी बड़ी सम्पत्ति का उसने विनाश कर दिया।
उस लकड़हारे की दशा पर, उसकी मूर्खता पर आपको करुणा आती है। किन्तु सुनो मेरे भाई! हम स्वयं भी तो उस लकड़हारे की भाँति हैं। राजाओं के राजा उस परमात्मा ने न जाने किस बात से प्रसन्न होकर साँसों का यह चन्दन से पूर्ण वन हमें दिया था। हमने कुत्सित वासनाओं, घृणा, पाप की अग्नि से जलाकर इसे भस्मसात् कर दिया। कितनी मूल्यवान् हैं ये साँसें, यह हमने समझा नहीं। साँसों का चन्दन-वृक्षों से पूर्ण वन, जिसे हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आग में जलाकर कोयला बना दिया। परन्तु जो होना था, सो हो गया। अब तो रह गये चन्दन के थोड़े-से वृक्ष-थोड़े-से वर्ष रह गये हैं इस जीवन के; शायद थोड़े महीने। आओ, इन्हीं का ठीक-ठीक उपयोग करो। यत्न करो कि तुम्हारा लोक और परलोक सुधर जाय।
बहुत गई थोड़ी है बाकी, अब तो अलख जगा बाबा!
थोड़े दिन का खेल तमाशा, क्यों आसक्त बना बाबा?

स्वास्थ्य

ये सात लक्षण हो सकते हैं थाइरॉइड के संकेत

ज्यादा काम भी नहीं किया और थकान महसूस हो रही हो या खान-पान पर ध्यान देते हैं फिर भी वजन तेजी से बढ़ता ही जा रहा हो। शरीर में ऐसे कई बदलाव होते हैं जिनको हम पहले तो हल्के में लेते हैं और बाद में यह हमारे लिए किसी गंभीर रोग का संकेत निकलते हैं, थाइरॉइड की समस्या भी कुछ ऐसी ही है।
अक्सर थाइरॉइड के लक्षणों को हम शुरूआती दौर में भांप ही नहीं पाते हैं और बाद में इसके लक्षणों की अनदेखी हमें हाइपोथाइरॉइड या हाइपरथाइरॉइड की स्थिति तक पहुँचा देती है। थाइरॉइड हमारे शरीर में मौजूद ऐसी ग्रन्थि है जो मेटाबॉलिज्म में मदद करती है। इसमें मौजूद हार्मोन टी ३, टी ४ और टीएसएच का स्तर कम या ज्यादा होने की समस्या होती है।

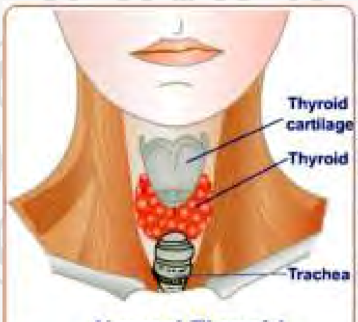

Normal Thyroid

अगर आप इन सातों लक्षणों को महसूस कर रहे हैं तो हो सकता है ये आपके लिए थाइरॉइड की समस्या का संकेत हो।

१. मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द
हाइपोथाइरॉइड यानी शरीर में टीएसएच अधिक और टी३, टी४ कम होने पर मांसपेशियों में और जोड़ों में अक्सर दर्द रहता है।

२. गर्दन में सूजन
थाइरॉइड बढ़ने पर गर्दन में सूजन की संभावना बढ़ जाती है। गर्दन में सूजन या भारीपन का एहसास हो तो तुरन्त डॉक्टर को दिखाएँ।

३. बालों और त्वचा की समस्या
खासतौर पर हाइपोथाइरॉइड की स्थिति में त्वचा में रूखापन, बालों का झड़ना, भौहों के बालों का झड़ना जैसी समस्याएँ होती हैं जबकि हाइपरथाइरॉइड में बालों का तेजी से झड़ना और संवेदनशील त्वचा जैसे लक्षण दिखते हैं।

४. पेट खराब होना
लम्बे समय तक कब्ज या कान्सटिपेशन की समस्या हाइपोथाइरॉइड में होती है जबकि हाइपरथाइरॉइड में दस्त या डायरिया की दिक्कत बार-बार होती है।

५. हार्मोनल बदलाव
महिलाओं को पीरियड्स के दौरान थाइरॉइड की स्थिति में पेट में दर्द अधिक रहता है वहीं हाइपरथाइरॉइड में अनियमित पीरियड्स रहते हैं। थायरॉइड की स्थिति में गर्भधारण करने में भी दिक्कत हो सकती है।

६. मोटापा
हाइपोथाइरॉइड की स्थिति में तेजी से वजन बढ़ता है। इतना ही नहीं शरीर में कॉलेस्ट्रॉल का स्तर भी बढ़ जाता है। वहीं हाइपरथाइरॉइड में कॉलेस्ट्रॉल बहुत कम हो जाता है।

७. थकान, अवसाद या घबराहट
अगर बिना अधिक मेहनत करने के बाद भी आप थकान महसूस करते हैं या छोटी-छोटी बातों पर घबराहट होती है तो इसकी वजह थाइरॉइड हो सकती है।

साभार - डॉ. स्मिता चन्द्रा
एम.डी.,स्त्री रोग विशेषज्ञ, वाराणसी

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव जीवन यात्रा

आश्रम व्यवस्था का सामाजिक महत्त्व

का चतुर्थ एवं अन्तिम पड़ाव संन्यासाश्रम है।

मानव निर्माण की प्रक्रिया गर्भाधान से प्रारम्भ होकर अन्त्येष्टि संस्कारोपरान्त पूरी होती है। सम्पूर्ण मानव निर्माण को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन किया है। महर्षि मनु के अनुसार **'ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा '** (मनु. ६/८७) ये चार आश्रम हैं। ब्रह्मचर्याश्रम में मानव अपनी शक्तियों को विकसित करने में अहर्निश लगा रहता है। गृहस्थ में प्रविष्ट होते ही उसका ध्यान अपने अतिरिक्त दूसरों के बारे में भी जाता है। दूसरों के लिए परिश्रम करना, भूखा रहना, निद्रा आने पर भी जागते रहना, परहित, परोपकारादि के साथ-साथ ईश स्मरण एवं पंचयज्ञादि कर्मों मे प्रवृत्त रहता है। व्यक्ति की दृष्टि अपने तथा अपनों तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, दूसरों का भी उसे ध्यान रखना चाहिए, यह सद्भावना और सत्कर्म परिवार तक सिमट कर न रह जाए, इसलिए वानप्रस्थ और संन्यास का विवेचन करते हुए महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया कि- 'व्यक्ति अपने बच्चों को ही अपना न समझे अपितु पूरे ग्राम के बालकों एवं स्त्री-पुरुषों को स्वजन समझकर उनके दुःख-दर्द को दूर करने, उन्हें अपने अनुभव और शिक्षा से शिक्षित करने का सेवा कार्य वानप्रस्थ होकर करे।' (संस्कार विधि-संन्यास प्रकरण)

वानप्रस्थी द्वारा परोपकार का कार्य ग्राम, नगर या मोहल्ले तक ही सीमित न रह जाय, अपितु राष्ट्र के कल्याण और उन्नति से आगे उसकी दृष्टि जावे और विश्व को ही अपना परिवार **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** समझ, विश्व के कल्याण के लिए, विश्व के समस्त प्राणियों के दुःख को अपना दुःख समझकर उसे दूर करने के लिए संन्यासाश्रम में प्रविष्ट होना चाहिए। परमेश्वर सारे विश्व का भरण-पोषण कर रहा है। उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिए, अपना जीवन ईश्वर से जोड़ते हुए विश्व के कल्याण के लिए संन्यासी प्रयत्न करता है। जैसे विश्व के कण-कण में वह परमेश्वर समाया हुआ, उसकी सत्ता का सर्वत्र अनुभव कराता हुआ प्राणी मात्र में आत्मस्वरूप विद्यमान है (यजु. ४०/७) उसी प्रकार संन्यासी निष्कपट और निष्पक्ष होकर अपनत्व की दृष्टि से संसार का उपकार करता हुआ संस्कृति की रक्षा करता है। जाहिर है यदि प्राचीनकाल में ऋषि-महर्षि नहीं होते तो आज वैदिक धर्म और प्राचीन संस्कृति नष्ट प्रायः होती।

महर्षि दयानन्द ने समाज में संन्यासी की तुलना शरीर में सिर से की है। अर्थात् शरीर में जो स्थान सिर का है वही स्थान समाज में संन्यासी का है। जिस प्रकार सम्पूर्ण मानव शरीर का संचालन सिर के द्वारा होता है उसी प्रकार समाज का संचालन ब्राह्मण और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ संन्यासी द्वारा होता है। वही समाज को ज्ञान देता है और सबको अपने कार्य में प्रवृत्त कराता है। जिस प्रकार मानव मस्तिष्क विकृत होने पर सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाएँ बिगाड़ देता है, उसी प्रकार संन्यासी के न रहने पर समाज कुमार्गी हो जाता है।

वर्णाश्रम व्यवस्था में सामाजिक हित की निहितता का प्रतिपादन करते हुए, तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महाराज लिखते हैं कि 'आश्रम व्यवस्था मानवता के लिए अमूल्य वरदान है। मानव केवल पंच भौतिक शरीर नहीं है, मन, बुद्धि और आत्मा भी है। इसलिए मानव जीवन का ध्येय भौतिक कभी नहीं हो सकता। धन, धन के लिए नहीं, धन तो प्राप्य वस्तुओं को जुटाने के लिए होता है। वस्तुएँ, वस्तुओं के लिए नहीं, शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जुटाई जाती हैं। शरीर, शरीर के लिए नहीं, उपभोग का साधनभूत होता है। उपभोग भी उपभोग के लिए नहीं, उससे होने वाले सुख या आनन्द को पाने के लिए होता है और यह सुख या आनन्द की अनुभूति भौतिक शरीर का नहीं, अभौतिक आत्मा का विषय है। इस प्रकार जीवन प्राप्ति की क्रमबद्ध योजना है। इस व्यवस्था में धन कमाने का अधिकार मर्यादित है। चार वर्णों में केवल एक वर्ण वैश्य धन कमा सकता है। और वह भी चार अवस्थाओं में से केवल एक गृहस्थाश्रम में। वह यह भी जानता है कि अभी जो कुछ मैं कमा रहा हूँ उसे एक न एक दिन मुझे छोड़ना ही है, वानप्रस्थ बनना ही है। राजा भी जानता है कि एक दिन मुझे सब कुछ छोड़कर वन में वास करने चले जाना है। इस प्रकार इस व्यवस्था में सम्पत्ति के अधिकार को मर्यादित कर दिया गया है। इसमें धन एहिक भोग का साधन मात्र है, साध्य नहीं। जब पैसा साध्य बन जाता है, भगवान या आराध्य बन जाता है तब न भगवान रहता है न मानव या मानवता। तब उसे पाने के लिए सुपथ-कुपथ में कोई अन्तर नहीं रहता है। भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन जाता है। ऐसा न हो इस हेतु आश्रम व्यवस्था अत्यावश्यक है। स्पष्ट है कि 'वर्णाश्रम व्यवस्था में ही समाज का समग्र सुख निहित है।'

सम्पादक- अशोक आर्य

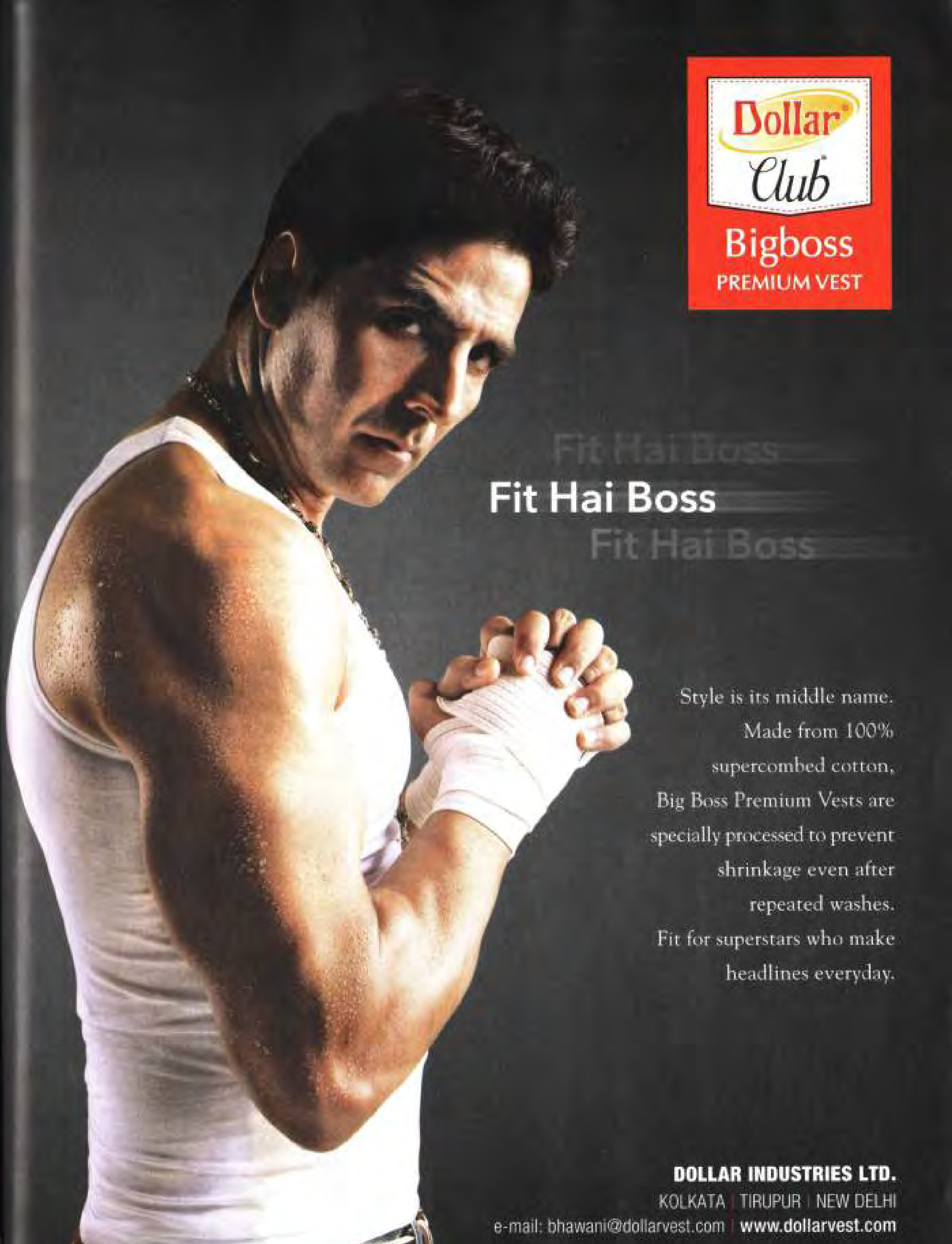
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Style is its middle name.
Made from 100%
supercombed cotton,
Big Boss Premium Vests are
specially processed to prevent
shrinkage even after
repeated washes.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RnI Registration no RAJHIN | November | Postal Registration no RJUD

सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ७४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय– शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर